ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 11 अंक 30 22 से 28 अक्टूबर, 2015 दयानन्दाब्द 192 सृष्टि सम्वत् 1960853116 सम्वत् 2072 आ. शु. 09

आर्य समाज देव नगर नई दिल्ली के वार्षिकोत्सव के अवसर पर

पूज्य स्वामी आर्यवेश जी के हृदयग्राही प्रवचनों ने मचाई धूम

दिल्ली के कोने-कोने से प्रतिष्ठित आर्यजनों ने पधार कर विद्वतापूर्ण प्रवचनों का उठाया लाभ

आर्यों को सामाजिक बुराईयों से त्रस्त जनता का करना होगा भरपूर सहयोग

- स्वामी आर्यवेश

आर्य समाज देवनगर, नई दिल्ली का 55वाँ वार्षिकोत्सव दिनांक 8 अक्टूबर से 11 अक्टूबर, 2015 तक हर्षोल्लास पूर्वक सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर प्रतिदिन प्रात: 7.30 से 9.30 बजे तक चतुर्वेद शतकीय यज्ञ का भव्य तथा आकर्षक आयोजन किया गया। इस यज्ञ के ब्रह्मा प्रसिद्ध वैदिक विद्वान तथा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान पूज्य स्वामी आर्यवेश जी रहे। वेद पाठ आर्य समाज के पुरोहित श्री भास्कर पाठक तथा श्री अशोक शास्त्री जी ने किया। इस अवसर पर आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों में महिला सम्मेलन, बच्चों की लिखित प्रतियोगिता एवं बच्चों द्वारा प्रस्तुत विशेष कार्यक्रमों ने आर्यजनों का मन मोह लिया। पं. संदीप आर्य, पं. सहदेव सरस के भजनोपदेशों ने कार्यक्रम में चार-चांद लगा दिये। विभिन्न अवसरों पर पधारे विद्वतजनों ने विद्वतापूर्ण प्रवचनों से श्रोताओं को लाभान्वित किया। सम्पूर्ण कार्यक्रम का संयोजन श्री नफेसिंह देसवाल प्रधान आर्य समाज देवनगर ने किया तथा सम्पूर्ण व्यवस्था का उत्तरदायित्व श्री दिव्य प्रकाश उपप्रधान, श्री रमेश वेदी मंत्री, कोषाध्यक्ष श्री राजेन्द्र दीवान, श्री सुशील बाली आदि के अतिरिक्त समाज के सेवक श्री रामविलास सिंह ने अत्यन्त कुशलता से निभाया।

समापन समारोह में श्री ओम प्रकाश नरूला, उपप्रधान आर्य समाज डोरी बालान तथा प्रधान श्री वागीश शर्मा, आर्य समाज करोल बाग के प्रधान श्री कीर्ति शर्मा, श्री सुधीर घई, मंत्री आर्य समाज विरला लाइन्स, श्री राकेश वेदी, मंत्री आर्य समाज अशोक विहार फेस-2 के अतिरिक्त आर्य समाज मॉडल बस्ती, आर्य समाज राजेन्द्र नगर, आर्य समाज किशनगंज, आर्य समाज साकेत, आर्य समाज शक्तिनगर आदि के पदाधिकारी भी सम्मिलित हुए। समापन समारोह में केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के प्रधान डॉ. अनिल आर्य भी पधारे। इन गणमान्य व्यक्तियों के अतिरिक्त आस-पास के क्षेत्रों तथा विभिन्न आर्य समाजों के प्रतिनिधि भारी संख्या में उपस्थित थे।

8 अक्टूबर से 11 अक्टूबर, 2015 तक चले इस वार्षिकोत्सव में प्रतिदिन होने वाला चतुर्वेद शतकीय यज्ञ विशेष आकर्षण का केन्द्र रहा। इस यज्ञ के ब्रह्मा पूज्य स्वामी आर्यवेश जी ने वेद मंत्रों के माध्यम से मानव जीवन की सार्थकता एवं मनुष्य जीवन के उद्देश्य पर प्रभावशाली सारगर्भित प्रवचनों से जनता को मन्त्रमुग्ध कर दिया। स्वामी जी का तार्किक शैली एवं

दृष्टान्तों के माध्यम से सरल भाषा में विषय का प्रस्तुतीकरण श्रोताओं के दिल दिमाग में गहराई तक असर कर गया। जिसने भी स्वामी जी की विद्वतापूर्ण शैली का रसास्वादन किया अगले दिन वह अपने परिवार और साथियों को साथ लाना नहीं भूला जिससे निरन्तर श्रोताओं की संख्या बढ़ती चली गई।

11 अक्टूबर को स्वामी जी के चुम्बकीय आकर्षण के फलस्वरूप आर्य समाज का विशाल हाल खचाखच भर गया तथा बहुत से श्रोता बाहर खड़े होकर अत्यन्त, मनोयोग से अपनी मानसिक क्षुधा को शान्त कर रहे थे। स्वामी जी ने चारो दिन यज्ञ के अवसर पर मनुष्य जीवन के निष्काम भाव को प्राप्त करने पर अत्यन्त व्यवहारिक विचार प्रस्तुत किये। रात्रि के प्रवचनों में स्वामी जी ने जहाँ वर्णाश्रम व्यवस्था कर्मफल एवं पुनर्जन्म विषय पर प्रकाश डाला वहीं अन्तिम दिन आर्य समाज को एक आन्दोलन का रूप देने का आह्वान किया। स्वामी जी ने ''आर्य'' की परिभाषा व्यक्त करते हुए कहा कि आर्य कहलाने का अधिकारी वही हो सकता है जो सदाचारी, परोपकारी, दानी तथा औरों के सुख-दु:ख को अपना समझता हो। स्वामी जी ने कहा कि आर्यों को चाहिए कि वे समाज के दु:खी, त्रस्त, पीड़ित एवं दलित लोगों के साथ खड़े हों, उनका सहयोग करें उनके अधिकारों की लड़ाई लड़ें तथा उनके जीवन में आये दुर्गुणों, दुर्व्यसनों को दूर करने के लिए उन्हें प्रेरित करें। उनका आश्रय बने और उनको इस बात का अहसास करायें कि आर्य लोग समाज के प्रत्येक व्यक्ति की उन्नति में अपनी उन्नति समझते हैं। यही महर्षि दयानन्द सरस्वती का सन्देश है, आदेश है। स्वामी जी ने कहा कि यदि आर्यजन इस प्रकार समाज के साथ अपने आपको जोड़ेंगे तो लाखों लोग आर्य समाज के साथ स्वत: जुड़ जायेंगे।

कन्या भ्रूण हत्या, नशाखोरी, अश्लीलता, भ्रष्टाचार, गोहत्या, धार्मिक पाखण्ड जैसी ज्वलन्त समस्याओं पर जन सामान्य का आह्वान करते हुए स्वामी जी ने कहा कि उपरियुक्त समस्याओं से आज पूरा समाज त्रस्त है आओ हम सब मिलकर इन समस्याओं के विरुद्ध जन-जागरण अभियान चलायें और समाज में फैली बुराईयों, जातिवाद, साम्प्रदायिकता, नशाखोरी, भ्रष्टाचार, नारी उत्पीड़न, शोषण, पाखण्ड आदि को मिटाकर एक स्वस्थ एवं श्रेष्ठ समाज का निर्माण करें। इसी को कहते हैं आर्य समाज। यदि समाज श्रेष्ठ (आर्य) बनेगा तो उसे हम आर्य समाज की संज्ञा दे सकते हैं। स्वामी जी ने कहा कि आर्यों को आर्य समाज की चारदीवारी से बाहर निकल कर समाज के पिछड़े, दबे-कुचले लोगों के बीच जाकर उनका सहयोग करना चाहिए और अपने आर्यत्व का परिचय देना चाहिए।

पूज्य स्वामी जी के हृदयग्राही प्रवचनों से दिल्ली में हलचल मची हुई है और कई आर्य समाजों के पदाधिकारियों ने अपनी समाजों और क्षेत्रों में उनसे प्रवचन करने के लिए आग्रह किया है। स्वामी जी ने उनसे विनम्रता पूर्वक कहा कि जब वे सभा के मुख्यालय में दिल्ली रहेंगे तब वे प्रतिदिन प्रात: तथा रात्रि में दिल्ली की आर्य समाजों में प्रवचन श्रृंखला चलाकर आप सबके मध्य आयेंगे। आर्य समाज देवनगर के समस्त पदाधिकारियों ने स्वामी जी का जबरदस्त अभिनन्दन तथा सत्कार किया तथा पुन: पधारने का आमंत्रण दिया।

प्रात:काल जलपान तथा रात्रि में ऋषिलंगर की सुन्दर व्यवस्था की गई थी जिसमें प्रतिदिन सैकड़ों लोगों ने भाग लिया। कार्यक्रम अत्यन्त सफल रहा।

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

शौर्य, पराक्रम और क्षात्रधर्म का पर्व : विजय दशमी

- डॉ. भवानीलाल भारतीय

आर्यों के प्रमुख पर्वों में आश्विन मास के शुक्ल पक्ष की दशमी तिथि विजयदशमी के नाम से जानी जाती है। यह एक वैदिक पर्व है जो आर्य जाति के शौर्य, तेज, बल तथा क्षात्रवृत्ति का परिचायक है। अज्ञानवश इसे राम द्वारा लंकाधिपति रावण को युद्ध में पराजित करने का दिवस मान लिया है। वस्तुतः इस पर्व का राम की लंका विजय से कोई सम्बन्ध नहीं है। यह तो भगवान् राम के आविर्भाव से पहले से चला आ रहा क्षात्रधर्म का प्रतीक पर्व है। वैदिक धर्म में ब्रह्म शक्ति और क्षत्र शक्ति के समन्वित विकास की बात कही गई है। यजुर्वेद में कहा गया है -

यत्र ब्रह्मं च क्षत्रं च सम्यञ्चौ चरतः सहः।

जहां ब्रह्म और क्षत्र विद्वता और पराक्रम का समुचित समन्वय रहता है वहां पुण्य, प्रज्ञा तथा अग्नि तुल्य तेज और ओज रहता है। वाल्मीकीय रामायण के अनुसार लंका पर राम की विजय चैत्र मास में हुई थी अतः आश्विन मास की दशमी का लंका विजय से कोई सम्बन्ध नहीं है। विजयदशमी तक वर्षा ऋतु समाप्त हो जाती है। प्राचीन काल में लगभग तीन चार मास तक निरन्तर वर्षा होती रहती थी। वीरों की विजय यात्राएं बंद हो गईं। अब बरसात के समाप्त होने पर रास्ते खुल गए। सेनाओं के आने जाने की कठिनाई दूर हो गई। इस ऋतु परिवर्तन का लाभ उठाकर प्राचीन काल में क्षत्रिय इस दिन अपने शस्त्रास्त्रों की सफाई करते थे। उन्हें पुनः काम में लाने लायक बनाते थे तथा राजाज्ञा से शस्त्रों की प्रदर्शनी लगाई जाती थी। वीर लोगों को अपनी अस्त्र शस्त्र विद्या के सार्वजनिक प्रदर्शन का अवसर मिलता है। आम जनता भी इन वीरों की शस्त्र विद्या तथा शौर्य प्रदर्शन को देखने के लिए बड़ी संख्या में एकत्रित होती थी। महाभारत में यह प्रसंग विस्तार से आता है जहां यह उल्लिखित हुआ है कि पितामह भीष्म के आदेश से आचार्य द्रोण ने अपने शिष्यों (कौरव एवं पाण्डव) को शस्त्रास्त्र कौशल को दिखाने के लिए एकत्र किया था। यह प्रदर्शन सार्वजनिक था।

भारत के इतिहास तथा परम्परा में क्षात्रवृत्ति का अनुसरण करने वाले वीरों की गौरव गाथा का विस्तारपूर्वक उल्लेख मिलता है। त्रेतायुग के दशरथ पुत्र वीरों का उल्लेख हमें स्मरण दिलाता है कि अत्याचार, अनाचार तथा आसुरी वत्तियों को पराजित करने के लिए राम ने कितना पुरुषार्थ किया था। उनका वन गमन इसी उद्देश्य से हुआ था। मानसकार ने राम के मुख से कहलाया है -

निशिचरहीन करौ मही भुज उठाय प्रण कीन।

राम ने भुजा उठाकर प्रतिज्ञा की - मैं इस धरती को असुरों से रहित कर दूंगा। द्वापर में भगवान श्री कृष्ण तथा पाण्डवों के पराक्रम और पौरुष की गाथा भगवान् श्री कृष्ण द्वैपायन व्यास ने अपने अमरग्रन्थ महाभारत में विस्तार से गाई है। यहाँ श्री कृष्ण को वेद वेदांग का ज्ञाता तो कहा ही है, भीष्म के शब्दों में वे बल में भी तत्कालीन सब वीरों में अग्रगण्य हैं। (द्रष्टव्य महाभारत सभा पर्व में पितामह का कथन)

वेद वेदांग विज्ञान बलं चाप्यधिकं तथा।
नृणां लोके कोऽन्योस्ति विशिष्टः केशवाहते।।

मनुष्य लोक में सुदर्शन चक्रधारी श्री कृष्ण से बढ़कर कोई बलशाली तथा शास्त्रज्ञ नहीं हुआ। जहां तक अर्जुन का सम्बन्ध है उसकी तो दो प्रतिज्ञाएं सर्वविदित हैं -

अर्जुनस्य प्रतिज्ञे द्वे न दैन्यं न पलायनम्।

अर्जुन ने युद्ध में न तो दीनता दिखलाई और न कभी पलायन किया। गाण्डीवधारी पार्थ तथा गदाधारी भीम अपने युग के महावीर थे। आर्य धर्म में शस्त्र और शास्त्र को तुल्य

महत्व मिला था। यहां यह स्वीकार किया गया था कि शस्त्र के द्वारा रक्षित राष्ट्र में ही शास्त्र का चिन्तन सम्भव होता है -

शस्त्रेण रक्षिते राष्ट्रे शास्त्र चिन्ता प्रवर्त्तते।

भारतीय इतिहास में परशुराम शस्त्र और शास्त्र दोनों में सफल बताए गए हैं। उनके एक हाथ में शस्त्र है तो दूसरे में शास्त्र है। बाण (शर) क्षात्रधर्म का प्रतीक है तो शास्त्र ब्राह्मर्ण धर्म का प्रतीक है। परशुराम के शब्दों में - इदं ब्रह्मं इदं क्षत्रं शापादऽपि शरादऽपि।

मैं शत्रु से लोहा लेने के लिए हर तरह से तैयार हूँ। यदि वे युद्ध करना चाहते हैं तो मेरा परशु (फरसा) तैयार है और यदि वे ब्राह्मण के शाप को ग्रहण करने की शक्ति रखते हैं तो वह भी तैयार है।

वीरों की यह परम्परा अद्यपर्यन्त चली आई है। सम्राट चन्द्रगुप्त की वीरता को बल मिला विष्णुगुप्त चाणक्य की नीति तथा शास्त्रज्ञता से। मध्यकाल के वीरों में महाराणा प्रताप, मराठा वीर शिवाजी तथा दशम गुरु गोविन्द सिंह की वीरत्रयी का उल्लेख आवश्यक है। महाराणा ने तो (मेवाड़) उदयपुर की स्वाधीनता की रक्षा के लिए अपना सर्वस्व बलिदान किया। स्त्री और सन्तान सहित वर्षों तक वनों में भटकते रहे। अन्ततः उन्होंने अपनी प्रजा के हित को सर्वोपरि रखा और मुगल बादशाह की सत्ता को अस्वीकार किया। उदयपुर के राजचिन्ह के साथ क्षात्र धर्म का आदर्श सदा अंकित रहा।

क्षत्रियस्य परमोधर्मः प्रजानामेव पालनम्।
प्रजा का पालन ही क्षत्रिय का परम धर्म है।

राजस्थान के अन्य राज्यों में भी वीरता के आदर्श को ही स्वीकार किया था। जोधपुर के राठौड़ राजाओं के लिए यह उक्ति प्रसिद्ध है-

रणवका राठौड़ - राठौड़ क्षत्रिय युद्ध में बांके सिद्ध हुए हैं।

शिवाजी के पराक्रम कूटनीति तथा शस्त्र कौशल का लोहा तो मुगल बादशाह औरंगजेब को भी स्वीकार करना पड़ा था। शिवाजी ने हिन्दू धर्म, संस्कृति और मानवता के मूल्यों की रक्षा के लिए आजीवन संघर्ष किया। महाकवि भूषण का यह कथन शतप्रतिशत सत्य है - शिवाजी न होतो तो सुनत होती सबकी।

उधर पंजाब के सिख गुरु गोविन्द सिंह ने अपने शिष्यों में वीर भावना जगाई। उनका कहना था कि अब तक हिन्दू चिड़िया की भांति सीधे साधे थे, अत्याचारों का मुकाबला करने की सामर्थ्य उनमें नहीं थी। गुरु महाराज की प्रतिज्ञा थी, मैं चिड़ियों को बाज बनाऊँगा अर्थात् बाज जैसे शक्तिशाली पक्षी की भांति शत्रु पर टूट पड़ने का साहस उनमें पैदा करूँगा। वस्तुतः सिख मत में जो क्षात्र भावना जगी उसका प्रयोग हिन्दू धर्म की आततायियों से रक्षा करना था। नवम गुरु तेजबहादुर के बारे में कहा गया है - गुरु महाराज ने हिन्दू धर्म के प्रतीक यज्ञोपवीत, शिखा तथा तिलक की रक्षा की। सचमुच उन्होंने कलियुग में वीरता, त्याग और बलिदान का अपूर्व आदर्श प्रस्तुत किया। विजयदशमी से हमें यही प्रेरणा लेनी है। स्वाधीनता सेनानी बलिदानी लोगों ने क्षात्र धर्म के प्रतीक बसन्ती चोले को पहना और देश के लिए आत्म बलिदान किया था। अहिंसा के साथ-साथ दुष्टों के दमन के लिए शस्त्रों का प्रयोग सर्वथा वांछनीय है। परमात्मा भी बलशाली है, अतः उससे हम बल की ही प्रार्थना करते हैं -

बलमसि बलमयि धेहि। हे परमात्मन् आप बल के भण्डार हैं, हम में बल को धारण कराएं।

- 3/5 शंकर कालोनी, श्री गंगानगर (राज.)

आर्य समाज स्टेशन रोड पीलीभीत, उत्तर प्रदेश में वेद प्रचार की धूम

आर्य समाज स्टेशन रोड पीलीभीत, उत्तर प्रदेश में दिनांक 1 से 6 सितम्बर, 2015 तक यजुर्वेद पारायण यज्ञ व वेद कथा का आयोजन किया गया जिसमें सैकड़ों श्रद्धालुओं ने भाग लिया। वृष्टि यज्ञ भी किया गया।

इस समारोह में वेद सम्मेलन, गऊ रक्षा सम्मेलन, चरित्र निर्माण सम्मेलन, स्त्री शिक्षा सम्मेलन, राष्ट्र रक्षा सम्मेलन, पाखण्ड मिटाओ सम्मेलन करके जनता को जागरूक किया गया। इस अवसर पर युवक-युवतियों की विशेष उपस्थिति रही।

इस अवसर पर भारत के प्रसिद्ध कवि, लेखक वैदिक विद्वान् पं. नन्दलाल निर्भय भजनोपदेशक के भिन्न-भिन्न विषयों पर भजनोपदेश होते रहे जिनकी श्रोताओं ने विशेष सराहना की। श्री उषर्बुद्ध आचार्य जयपुर के प्रवचन हुए।

इस वैदिक प्रचार से स्थानीय जनता में आर्य समाज की प्रशंसा की जा रही है। शांति पाठ के पश्चात समारोह का समापन किया गया।

- प्रकाश वीर आर्य, प्रधान आर्य समाज स्टेशन रोड, पीलीभीत, उत्तर प्रदेश

वेदों में प्रतिपादित नारी का आदर्श स्वरूप

– डॉ. शारदा वर्मा

नारी परमपिता परमात्मा की अद्वितीय रचना है। नारी के बिना सृष्टि की कल्पना अधूरी है। वैदिककाल के पश्चात् प्रत्येक युग में नारी की स्थिति में अन्तर आता रहा है चाहे वह रामायणकाल हो या महाभारतकाल। किन्तु, आज की नारी की दयनीय स्थिति को देखकर पुनः वैदिककाल की तरफ प्रयाण करना पड़ रहा है कि वैदिककाल में नारी की क्या स्थिति रही है? वैदिककालीन नारी विदुषी है, शिक्षिता है, तेजस्विनी है इत्यादि। प्रस्तुत निबन्ध में नारी के जन्म से लेकर उसके लालन-पालन, शिक्षा, वेशभूषा, समाज में स्थान तथा विवाह आदि बिन्दुओं पर चर्चा की जायेगी।

जन्म - सर्वप्रथम प्रश्न उठता है कन्या के जन्म का। कुछ लोग आक्षेप करते हैं कि वेदों में तथा अन्य वैदिक साहित्य में भी केवल पुत्र–जन्म की ही कामना की गई है, यहां तक कि दस पुत्र उत्पन्न करने का आदेश दिया गया है। इसका अर्थ यह है कि पुत्री जन्म की कामना वेद में नहीं की गई है, किन्तु वस्तुतः ऐसी बात नहीं है। ऐसे प्रसंगों में पुत्र शब्द से पुत्री का भी ग्रहण होता है। इस प्रकार पुत्र और पुत्री दोनों की समानरूप से कामना की गई है। इस विषय में पाणिनि मुनि प्रमाण है। अष्टाध्यायी के एकशेष प्रकरण के **'भ्रातृपुत्रौ स्वसृदुहितृभ्याम्'** (पा० १।२।६८) सूत्र के आधार पर स्वसा और दुहिता के साथ भ्राता तथा पुत्र का समास करने पर भ्राता और पुत्र ही शेष रहते हैं यथा–भ्राता च स्वसा च=भ्रातरौ, पुत्रश्च दुहिता च=पुत्रौ। इसी प्रकार माता च पिता च इति 'पितरौ' बनता है। इस प्रकार पुत्र शब्द से पुत्र एवं पुत्री दोनों का ही ग्रहण होता है। इसके अतिरिक्त बृहदारण्यकोपनिषद् में तो विस्तार से पुत्र व पुत्री के जन्म के लिए पृथक्–पृथक् औषधियों व खानपान का भी उल्लेख किया गया है।

शिक्षा - वैदिककाल में स्त्री को भी पुरुष के समान ही पढ़ने–पढ़ाने का अधिकार प्राप्त था। अथर्ववेद ११।५।१८ का मन्त्र सुप्रसिद्ध है–**''ब्रह्मचर्येण कन्या युवानं विन्दते पतिम्।''** यहाँ पर विशेष कथनीय यह है कि यहाँ ब्रह्मचर्य शब्द का अर्थ वेदाध्ययन है। अविवाहित रहकर, संयमपूर्वक शारीरिक ब्रह्मचर्य मात्र इसका अर्थ नहीं है। ब्रह्म का अर्थ वेद है–तत् चरति इति ब्रह्मचारी। चर् धातु गति तथा भक्षण अर्थ में है। गति के तीन अर्थ हैं– ज्ञान, गमन तथा प्राप्ति। इसका अर्थ है कि जो ब्रह्म अर्थात् वेद का ज्ञान तथा प्राप्ति करे वह ब्रह्मचारी है। कन्या भी इसी प्रकार ब्रह्मचारिणी होती थी। वह वेद का अध्ययन करती थी। कालान्तर में ब्रह्मचारी शब्द अविवाहित के अर्थ में रूढ़ हो गया। क्योंकि वेदाध्ययनकाल में छात्र–छात्राएँ अविवाहित ही रहते थे। शिक्षा के क्षेत्र में स्त्रियों को सम्मानित स्थान प्राप्त था। यहाँ तक कि चरणसंज्ञक वैदिक शिक्षा केन्द्रों में भी वे प्रविष्ट होकर अध्ययन करती थीं। **'जातेरस्त्रीविषयादयोपधात्'** (पा० ४।१।६३) सूत्र में जातिवाची स्त्री नामों में गोत्र और चरणवाची नामों का ग्रहण सब आचार्यों ने माना है। काशिका में 'कठी' और 'बह्वृची' ये उदाहरण दिये गये हैं। कृष्णयजुर्वेद की प्रसिद्ध शाखा का एक चरण कठ था। उसके संस्थापक आचार्य कठ सुप्रसिद्ध आचार्य वैशम्पायन के अंतेवासी थे। कठ के चरण में विद्याध्ययन करने वाली स्त्रियाँ कठी कहलायीं। इसी प्रकार बृह्वृच नामक ऋग्वेद के चरण में अध्ययन करने वाली ब्रह्मचारिणी कन्या बृहवृची संज्ञा की अधिकारिणी थीं। इससे ज्ञात होता है कि चरणों में जो मान–मर्यादा छात्रों की होती थी। वही छात्राओं के लिए भी थी। मीमांसा और व्याकरण जैसे जटिल विषयों का अध्ययन भी स्त्रियाँ करती थी। इस विषय में पातञ्जल महाभाष्य भी प्रमाण है। महाभाष्य (४।१।१४) में तृतीय वार्त्तिक की व्याख्या में लिखा है–**आपिशलम् अधीते ब्राह्मणी आपिशला।** इसी प्रकार वार्त्तिक पाँच की व्याख्या में **'काशकृत्स्निना प्रोक्ता मीमांसा काशकृत्स्नी, तामधीते काशकृत्स्ना'** लिखा है अर्थात् अपिशलि आचार्य से व्याकरण पढ़नेवाली आपिशला तथा काशकृत्स्नि आचार्य से मीमांसा का अध्ययन करने वाली स्त्री का शकृत्स्त्रा कहलाती थी। इसी प्रकार पाणिनीय व्याकरण का अध्ययन करनेवाली कन्या पाणिनीया कहलाती थी।

अध्यापन - ऐसे प्रमाण भी स्पष्टरूप में पाये जाते हैं कि विदुषी स्त्रियाँ अध्यापन के क्षेत्र में भी योगदान करती थीं जिसके आधार पर वे उपाध्याया तथा आचार्या जैसे गौरवपूर्ण पदों को भी प्राप्त करती थी। मनु ने साङ्गोपाङ्ग वेद के पढ़ानेवाले को ही आचार्य कहा है। इसी का स्त्रीलिङ्ग रूप 'आचार्या' है।

विवाह - विवाह का जो आदर्शस्वरूप वेद में वर्णित है वह अन्यत्र दुर्लभ है। विवाह–संस्कार के समय वर वधू से कहता है–**समापः हृदयानि नौ।** अर्थात् हम दोनों के हृदय जल के समान एक हो जाएँ। जिस प्रकार जल से जल को पृथक् नहीं किया जा सकता, उसी प्रकार पति और पत्नी को भी पृथक् नहीं किया जा सकता। गृहस्थाश्रम में प्रवेश

करते हुए वर और वधू का एक वार्तालाप ऋग्वेद (१०।१८३।१२) में दिया गया है। वहां दोनों ओर से एक–दूसरे को युवा–युवति, पुत्रकाम और पुत्रकामा इन शब्दों से सम्बोधित किया गया है। जिससे स्पष्ट होता है कि वेद की सम्मति में उन्हीं स्त्री पुरुषों को विवाहित–जीवन में प्रवेश करना चाहिए जो युवा हो चुके हों।

एकपत्नीत्व - वैदिकधर्म में एक पुरुष की एक ही पत्नी हो सकती है तथा एक स्त्री का एक ही पति हो सकता है। यह नियम जीवनभर के लिए लागू है। अथर्ववेद और ऋग्वेद में विवाह के समय नव वर–वधू को उपदेश दिया है ''कि तुम दोनों पति–पत्नी इस गृहस्थाश्रम की मर्यादा में स्थिर रहो। तुम कभी एक–दूसरे को मत छोड़ो तथा सम्पूर्ण आयु को प्राप्त करो।''

इहैव स्तं मा वियौष्टं विश्वमार्युव्यश्नुतम्।

– अथर्व० १४।१।२२; ऋग्० १०।८५।४२

अथर्ववेद में वर अपनी वधू को सम्बोधित करके कहता है ''हे पत्नि ! तू मुझ पति के साथ सन्तानवाली हो, तथा सौ वर्ष तक जीवित रहो।'' **मया पत्या प्रजावति सं जीव शरदः शतम्।** (अथर्व० १४।१।५२) कुछ स्त्रियाँ आजीवन कुँवारी रहती थीं। वे बड़ी होने पर वृद्ध कुमारी, जरत्कुमारी कहलाती थी। महाभारत में सुलभा नाम की एक भिक्षुणी का भी उल्लेख आया है।

वेश-भूषा - वेद में स्त्री की वेश–भूषा पर भी प्रकाश डाला गया है जो पैरों तक ढकी हुई होनी चाहिए–**मा ते कश्प्लकौ दृशन् स्त्री हि ब्रह्मा बभूविथ** (ऋग्० ८।३३।१९)। आधुनिकता के प्रतीक स्कर्ट आदि जो वस्त्र आज उपलब्ध हो रहे हैं वे वेद को अभिमत नहीं। स्त्री की वेश–भूषा ऐसी हो जिससे उसका शरीर अधनङ्गा न रहकर भली प्रकार आच्छादित रहे। वेद में स्त्री के मुख ढकने का विधान नहीं है अर्थात् परदाप्रथा वेदानुकूल नहीं है।

दहेज - वेद में प्रतीकरूप में सूर्या और सोम के आदर्श विवाह का उल्लेख किया गया है जिसमें दहेज के रूप में वैदिक–ज्ञान का ही प्राधान्य है, किसी प्रकार के धनादि का नहीं। आज दहेज के रूप में धन के प्राधान्य के कारण ही समाज नारकीय स्थिति को प्राप्त हो चुका है। अनेक युवतियाँ इस दानव से त्रस्त होकर आत्महत्याएँ कर रही हैं। स्वाधीन भारत में यह राष्ट्र एवं समाज के नाम पर कलंक है।

विवाह में परस्पर सहमति तथा आकर्षण - वैदिकधर्म में उन्हीं स्त्री–पुरुषों का विवाह–सम्बन्ध हो सकता है जिन्होंने एक–दूसरे को भली प्रकार जान लिया है और देख लिया है। ऋग्वेद के दशवें मण्डल के १८३वें सूक्त में विवाह करने की इच्छावाली वधू अपने भावी पति का सम्बोधन करके कहती है–'हे वर ! मैंने अपने मन–से अच्छी प्रकार तुम्हें जान लिया है तुम बहुत अच्छे ज्ञानी हो और गुरुकुल में तप का, सादगी और संयम का जीवन व्यतीत करके आये हो और तुम्हें सन्तान की कामना है। आइए हम दोनों मिलकर गृहस्थाश्रम में प्रवेश करें।'' इसी प्रकार वरवधू से कहता है–''हे वधू ! मैंने तुम्हें अपने मन से जान लिया है तुम उच्च गुणों वाली युवति हो और मुझे चाह रही हो, तुम्हें सन्तान की कामना भी है। आओ हम मिलकर सन्तानोत्पत्ति करें।''

अथर्ववेद (२।३६।५) में वधू से कहा गया है कि 'हे वधू ! तुम ऐश्वर्य की नौका पर चढ़ो और अपने पति को जो कि तुमने स्वयं पसन्द किया है, संसार सागर के परले पार पहुँचा दो।'' अतः यह स्पष्ट हो जाता है कि परस्पर सहमति के बिना वर–वधू का विवाह नहीं होना चाहिए।

किन्तु इस विवाह सम्बन्ध में वर–वधू की अभिरुचि के साथ–साथ माता–पिता तथा गुरुजनों की सलाह भी परमावश्यक है यथा–**'मनसा सविता ददात्'** (अथर्व० १४।१।६) के अनुसार–'कन्या को उत्पन्न करनेवाला पिता अपने मन से सारी बातें सोच–समझकर कन्या को पति के हाथ में देता है।' उसी मन्त्र में कहा है **''अश्विनास्तामुभावरा''** अर्थात् वर और कन्या के माता–पिता कन्या और वर को पसन्द करनेवाले बनते हैं। वैदिक विवाह में माता–पिता और समाज की सहमति भी आवश्यक है– विवाह में उपस्थित लोगों को विश्वेदेवा कहा गया है। आज के समान लड़के, लड़की द्वारा की गई Court Marriage वेद को अभिमत नहीं है।

परिवार में स्थिति - विवाहोपरान्त भी स्त्री को गौरवपूर्ण साम्राज्ञी का स्थान दिया गया है। सम्राट् का अर्थ है शासन करनेवाला। उसका स्त्रीलिङ्ग रूप साम्राज्ञी का सामान्यतः अर्थ शासन करनेवाली किया जाता है, किन्तु वेद में इसी प्रसङ्ग में अन्य मन्त्रों के द्वारा साम्राज्ञी के स्वरूप को स्पष्ट कर दिया गया है–जिस प्रकार नदी समुद्र में जाकर मिल जाती है, उसका स्वरूप पूरी तरह समुद्र में विलीन हो जाता है, बदले में समुद्र उसे अपना विशालतम स्वरूप प्रदान कर देता है। अब वह नदी नहीं, समुद्र कहलाती है। इसी प्रकार नववधु ससुराल में जाकर मिल जाए। यदि आज भी वेद का यह आदर्श स्वरूप अपना लिया जाए तो आज

शेष पृष्ठ 6 पर

दोपहर में अंधेरा

– जयंत नार्लीकर

प्रसिद्ध भौतिकविद् डॉ. जयंत विष्णु नार्लीकर ब्रह्माण्ड विज्ञान (कास्मोलाजी) के क्षेत्र में अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त हैं। सर फ्रेड हॉयल के साथ मिलकर गुरुत्वाकर्षण के क्षेत्र में किये गये उनके महत्त्वपूर्ण कार्य को सारी दुनिया में हॉयल नार्लीकर थ्योरी के रूप में जाना जाता है। १९७२ तक डॉ. नार्लीकर किंग्स कॉलेज, कैंब्रिज में फैलो थे। १९७२ में मुम्बई स्थित टाटा इंस्टीट्यूट ऑफ फंडामेंटल रिसर्च में प्रोफेसर के रूप में उन्होंने कार्य शुरू किया। वह इंटरनेशनल एस्ट्रोनॉमिकल यूनियन के ब्रह्माण्ड विज्ञान आयोग के अध्यक्ष भी थे। २००४ में भारत सरकार ने उन्हें पदम् विभूषण से और २०१० में महाराष्ट्र सरकार ने महाराष्ट्र भूषण सम्मान से सम्मानित किया.... डॉ. नार्लीकर ने निरंतर अपने लेखन के जरिये यह प्रयास किया है कि लोगों के अंदर एक वैज्ञानिक नजरिया विकसित हो। यहाँ हम उनका एक लेख प्रस्तुत कर रहे हैं जो अनेक अंधविश्वासों से मुक्त होने में सहायक हो सकता है।

– सम्पादक

जब कोई एक खगोल विज्ञानी की तरह मेरा स्वागत करते हुए यह जानना चाहता है कि ग्रहों का हमारे भाग्य पर क्या असर पड़ता है तो मैं हैरान हो उठता हूँ। यह सवाल करने वाला आम तौर पर कोई निरक्षर ग्रामीण नहीं होता। वह हाथ में मोबाइल फोन लिए कोई शिक्षित भारतीय नागरिक होता है। क्या उसे इस बात की जानकारी नहीं है कि वैज्ञानिक लोग ज्योतिष को गंभीरता से नहीं लेते?

यह विचार कि मनुष्य के भाग्य का संचालन ग्रहों से होता है काफी पुराना बल्कि यूं कहें कि यह बेबीलोन और ग्रीक संस्कृतियों के जमाने से है। वैसे देखा जाये तो वेदों में ग्रहों से चालित ज्योतिष का कोई उल्लेख नहीं है। ग्रहों और सौर मंडल का अध्ययन करने वालों ने इस तथ्य पर ध्यान दिया है कि अत्यंत नियमित ढंग से तारों के आकाशीय ढांचे में कुछ पिण्ड ऐसे हैं जिनकी गति एक जैसी है और जो कभी पीछे तो कभी आगे जाते हैं। ग्रीक लोग इन ग्रह पिण्डों को अपनी भाषा में घुमक्कड़ कहते हैं। ये ग्रह घूमते क्यों हैं? वैज्ञानिक रूझान वाले प्रेक्षकों ने अरस्तू का पालन किया और ग्रहों की गति को रेखागणित की दृष्टि से परिभाषित ऐसे ढाँचे में रखा जिससे इस घूमने की प्रक्रिया के तरीके को ढूंढा जा सके।

जो लोग इस समूह में नहीं थे उन्हें यह मान लिया कि ये ग्रह अपनी इच्छाशक्ति के कारण चक्कर लगाते रहते हैं। इस अवधारणा के आधार पर उन्होंने निष्कर्ष निकाला कि ग्रहों की इच्छाशक्ति का प्रभाव पृथ्वी पर रहने वाले नश्वर प्राणियों पर भी पड़ता है। यही विश्वास बड़ा रूप लेते-लेते ज्योतिष बन गया।

इस विश्वास ने दूर-दूर तक यात्रा की और भारत में इसके प्रति अत्यन्त सकारात्मक भाव देखने को मिला। वैज्ञानिक नजरिए को अनेक झटके लगे। लेकिन आगे चलकर कोपरनिकस, गैलीलियो और केप्लर ने ग्रहों की गति के पीछे जो वास्तविक पैटर्न है इसका पता कर लिया।

17वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में केप्लर की खोजों ने न्यूटन को गुरुत्वाकर्षण के नियम की खोज के लिए प्रेरित किया। आज हमें पता है कि ग्रहों की गति क्यों है। उनकी कोई इच्छाशक्ति नहीं होती। इसके विपरीत उनकी एक आंतरिक व्यवस्था होती है जिसके अनुसार वे गणितीय ढंग से निर्धारित फेरों के अनुसार सूर्य के चारों तरफ घूमते हैं। आज अंतरिक्ष वैज्ञानिक इस स्थिति में हैं कि वे एकदम सही-सही इस बात की गणना कर सकें कि उनका भेजा हुआ अंतरिक्ष यान किस ग्रह से और किस स्थान पर जाकर मिलेगा। इसलिए अब न केवल ग्रहों के साथ जुड़ा रहस्य गायब हो चुका है बल्कि अब इनका अध्ययन एक भौतिक पिण्ड के रूप में किया जाता है जो हमारे सौर मण्डल का एक हिस्सा है। इस पृष्ठभूमि में अगर देखें तो यह अजीब सी बात लगती है जब लोग यह सवाल करते हैं कि ग्रहों का उनके जीवन पर क्या प्रभाव पड़ता है।

भारतीयों के मानस में ज्योतिष उसी तरह जड़ जमाकर बैठा है जैसे जातिप्रथा। मैंने 40 से अधिक देशों की यात्राएँ की हैं और नक्षत्र विज्ञान से सम्बन्धित विषयों पर भाषण दिए हैं। मैंने देखा है कि भारत एकमात्र ऐसा देश है जहाँ हर भाषण के बाद कोई न कोई यह सवाल जरूर करता है कि ग्रहों का हमारे जीवन पर क्या प्रभाव पड़ता है। यद्यपि अनेक देशों में अखबारों में राशिफल जैसी चीजें प्रकाशित होती रहती हैं लेकिन भारत में ही इसे गंभीरता से लिया जाता है। लोग यह जानने के लिए परेशान रहते हैं कि पुराना घर छोड़कर नए घर में किस समय जाया जाए? यात्रा करने के लिए कौन सा शुभ मुहूर्त है? क्या कार या स्कूटर खरीदने के लिए यह ठीक समय है? क्या शादी-व्याह के लिए लड़के-लड़की की कुंडली मिला ली जाये अथवा कब कोई मुख्यमंत्री अपने मंत्रिमण्डल को शपथ ग्रहण कराए इसके लिए भी ग्रहों की मदद ली जाती है।

सवाल करने वाले की ओर से यह दलील दी जा सकती है कि कहीं कोई अज्ञात भौतिक सम्बन्ध होगा जिसके जरिए अलग-अलग समय में पैदा हुए लोगों पर अलग-अलग ग्रहों का प्रभाव पड़ता होगा। जो भी हो आधुनिक विज्ञान यह दावा तो नहीं करता कि उसने सारी चीजों की खोज कर ली है।

अगर इस संभावना को थोड़ी देर के लिए मान भी लें तो कोई भी व्यक्ति ग्रहों के प्रभावों के दावों का अनुभव सिद्ध अध्ययन कर सकता है। वैज्ञानिकों ने इस तरह के नियंत्रित प्रयोग किए हैं और इस नतीजे पर पहुँचे हैं कि मनुष्य के जीवन पर ग्रहों से पड़ने वाले प्रभाव की परिकल्पना का कोई आधार नहीं है। एक ही तारीख में विभिन्न अखबारों द्वारा दी गयी राशिफल पर एक नजर दौड़ाइए। वे कभी एक जैसे नहीं होते। विज्ञान आगे इसलिए बढ़ सका क्योंकि इसने परिकल्पनाओं या सिद्धान्तों के प्रति एक तर्कसंगत दृष्टिकोण अपनाया। किसी भी सिद्धान्त को गंभीरता से लेने के लिए सभी तथ्यों के साथ इसकी भविष्यवाणियों में भी निरंतरता होनी चाहिए। हो सकता है कि कोई सिद्धान्त आज इस मानक पर खरा उतर जाये लेकिन भविष्य में कुछ नए तथ्यों की व्याख्या करने में विफल हो जाये। वैसी हालत में उस सिद्धान्त में संशोधन किया जाना चाहिए या उसके स्थान पर नया सिद्धान्त लाना चाहिए। यह व्यवस्था जिसने विज्ञान की प्रगति में इतनी अच्छी तरह काम किया है इसका पालन हमें अपने दैनिक जीवन में भी करना चाहिए चाहे हम वैज्ञानिक हों या न हों।

अगर हमसे कहा जाता है कि अमुक विचार को इसलिए मानना चाहिए क्योंकि हमारी परंपरा ऐसा कहती है तो हमें इसका विरोध करते हुए उस विचार के समर्थन में तथ्यात्मक साक्ष्यों की खोज करनी चाहिए। यही वैज्ञानिक सोच है। अगर वैज्ञानिक सोच के साथ ज्योतिष की छानबीन करें तो उसका अस्तित्व कहीं नहीं टिकता।

अपनी पुस्तक 'भारत की खोज' में जवाहर लाल नेहरू ने वैज्ञानिक मिजाज के पक्ष में दलीलें दी थीं। उन्होंने इस तथ्य पर खेद व्यक्त किया कि हम अपनी परंपराओं से अभिभूत हो जाते हैं और बुद्धिमान लोगों की भी आलोचना की ग्रंथि काम करना बंद कर देती है। उन्होंने यह उम्मीद जताई थी कि राजनीतिक आजादी से इन स्थितियों में परिवर्तन आयेगा।

आजादी के 60 साल बाद भी अज्ञानता और अंधविश्वास तेजी के साथ फल-फूल रहा है। याद करिये कि जब यह खबर आई कि गणेश की मूर्ति दूध पी रही है तो इस पर लोगों ने कितने मूर्खतापूर्ण ढंग से काम किया। यह भारत में ही संभव है कि अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट मैचों से पूर्व अनेक टीवी चैनल मजे हुए खिलाड़ियों के साथ कुछ ज्योतिषियों को भी यह बताने के लिए बैठा देते हैं कि कौन सी टीम जीतेगी या हारेगी।

ज्योतिष में विश्वास, साधुओं और बाबाओं के चमत्कारों तथा वास्तुशास्त्र के प्रति निष्ठा में कमी आने की बजाय, जैसा कि नेहरू ने अपेक्षा की थी, लगातार वृद्धि होती गई है। वैज्ञानिक मिजाज की नेहरू की कल्पना धराशायी हो चुकी है। क्या हम 21वीं शताब्दी में रह रहे हैं या 18वीं शताब्दी में?

अन्तर्राष्ट्रीय वरिष्ठ नागरिक दिवस

1 अक्टूबर, 2015 को किया गया वरिष्ठजनों का सम्मान

भारतीय जनता पार्टी (वरिष्ठ नागरिक प्रकोष्ठ) ने दिनांक 1 अक्टूबर, 2015 को मानसरोवर जयपुर के परशुराम जनोपयोगी भवन में वरिष्ठ नागरिक सम्मान का आयोजन किया। 80 वर्ष एवं अधिक (महिलाओं सहित) वरिष्ठजनों को शॉल एवं प्रतीक चिन्ह भेंट कर सम्मानित किया गया। प्रदेश संयोजक नटवर लाल शर्मा एवं सह संयोजक (महानगर) नन्दकिशोर काम्बोज के सौजन्य से राजस्थान के सामाजिक न्यायमंत्री श्री अरूण चतुर्वेदी ने समारोह की अध्यक्षता की।

इस अवसर पर मानसरोवर आर्य समाज के प्रधान श्री अर्जुनेदव कालड़ा, साहित्य वरिष्ठ सदस्य श्री पूर्णचन्द सिंहल एवं भगवान सहाय शर्मा भी सम्मानित हुए। रविवार 4 अक्टूबर, 2015 के साप्ताहिक सत्संग में सम्मानितों को सभी ने बधाई दी।

– अर्जुनदेव कालड़ा, प्रधान, सुरेश साहनी, मंत्री

ग्लोबल वार्मिंग की वार्निंग

– राजेन्द्र प्रसाद आर्य

प्रत्येक व्यक्ति की अपनी-अपनी समस्या होती है, पर आज हम यहाँ विश्व के 700 करोड़ लोगों को उस समस्या से आगाह करना चाहते हैं जिसकी गम्भीरता का अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि विश्व के प्रत्येक व्यक्ति को अपने अस्तित्व की रक्षा के लिए आने वाले 20-25 वर्षों में प्रकृति के साथ लड़नी होगी, और वह समस्या है ग्लोबल वार्मिंग अर्थात् वैश्विक गर्मी की।

वैज्ञानिकों का मानना है कि पिछले 100 वर्षों में वातावरण के तापमान में 2 डिग्री की वृद्धि हो गई है, जिस वजह से गर्मी का प्रकोप बढ़ गया है। गर्मी बढ़ने का परिणाम ही है मौसम चक्र में बदलाव। इस मौसम चक्र में बदलाव के कारण ही कहीं सुनामी, कहीं अत्यधिक वर्षा, कहीं न्यून वर्षा, कहीं सुखाड़, कहीं चक्रवाती तूफान, कहीं बादल फटना, कही भू-स्खलन और भूकम्प के द्वारा दुनिया के अलग-अलग हिस्सों में अलग-अलग समय में हजारों लाखों लोगों की असमय मौत हो रही है, गर्मी बढ़ने के प्रभाव की वजह से ही मानों प्रकृति आज गुस्से में है, जिस वजह से प्रकृति इस प्रकार की भयंकर तवाही मचाती है।

वैज्ञानिकों का यह भी मानना है कि अगर समुचित उपाय कर इसे रोका नहीं गया तो यह गर्मी और भी बढ़ती जायेगी और अगर वातावरण में 2 से 3 डिग्री की और वृद्धि हो गई तो उत्तरी ध्रुव की बर्फ और हिमालय क्षेत्र के ग्लेशियर की बर्फ बड़ी तेजी से पिघलने लग जायेंगी जिससे नदियों में प्रलयकारी उफान आ जायेगा और नदियों का पानी चूंकि समुद्र में संग्रहीत होता है इसलिए समुद्र के जलस्तर में वृद्धि हो जायेगी। अगर समुद्र के जलस्तर में 5 से 10 इंच की भी वृद्धि होती है तो भारत के कुछ समुद्री किनारों में बसे शहर समेत दुनिया के अनेक देश कुछ हिस्से पानी में डुब जायेंगे। भारत के भी 12 राज्यों के लगभग 2 लाख गांव समुद्र के किनारे बसते हैं तो ये सभी गांव तथा अनेक नगर इसमें डूब जायेंगे। मुम्बई और गोवा जैसे शहर तथा हॉलैण्ड जैसे देश इसमें पूरी तरह से डूब जायेंगे क्योंकि इन सबका अस्तित्व समुद्र के जलस्तर से नीचे बना हुआ है।

आज इसकी गम्भीरता को देखते हुए अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर बहुत सारे देश क्वेटो प्रोटोकाल संधि से जुड़ गये हैं। अभी कुछ वर्ष पहले क्वेटो (जापान) में दुनिया के 156 देशों के राष्ट्राध्यक्षों ने इस विषय की गंभीरता को देखते हुए वैज्ञानिकों के एक दल का गठन महान वैज्ञानिक डॉ. आर. के. पचौरी के नेतृत्व में किया जो इस बात का पता लगायेंगे कि इसके कारण क्या है और कैसे इसके संभावित खतरे से दुनिया को बचाया जा सकता है।

वैज्ञानिकों के दल ने 4 वर्षों तक निरन्तर शोध और अध्ययन कर इसके कारणों का जो पता लगाया है वो बेहद ही चौकाने वाले हैं। वैज्ञानिकों के अध्ययन के अनुसार तो इसके छोटे-छोटे अनेक कारण हैं पर मुख्य कारण है मनुष्य की जीवनशैली में बदलाव, और जीवनशैली में बदलाव के मुख्य कारण है मनुष्य द्वारा मांसाहार का प्रयोग और उपभोग। बड़े पैमाने पर मांस का उत्पादन, वितरण और उपभोग की वजह से वातावरण में गर्मी बढ़ रही है। उन्होंने इसका वर्गीकरण इस प्रकार का किया है।

1. जरूरी उत्पादन और जरूरी यातायात से 18 प्रतिशत गर्मी बढ़ रही है।

2. मांस के उत्पादन और उपभोग से 25 प्रतिशत गर्मी बढ़ रही है।

3. गैर जरूरी उत्पादन और गैर जरूरी ट्रांसपोटेशन से 32 प्रतिशत गर्मी बढ़ रही है।

4. पर्यावरण का प्रदूषण और अन्य छोटे कारणों से 25 प्रतिशत गर्मी बढ़ रही है।

वैज्ञानिकों का मानना है कि जरूरी उत्पादन और जरूरी यातायात को तो रोका नहीं जा सकता पर बड़े पैमाने पर माँस के उत्पादन और उपभोग को रोककर 25 प्रतिशत गर्मी को कम किया जा सकता है, और अगर मांस का उत्पादन ही रोक दिया जाये तो इसी से सम्बन्धित मांस का ट्रांसपोर्टेशन जो कम तापमान पर एअर कंडीशन गाड़ियों द्वारा दुनिया के अन्य देशों में भेजा जाता है, भी रूक जायेगा तो इससे 32 प्रतिशत गर्मी का बढ़ना रूक जायेगा। फलस्वरूप दोनों मिलाकर 60 प्रतिशत गर्मी को कम किया जा सकता है।

यहाँ यह भी सवाल उठता है कि मांसाहार से गर्मी बढ़ने का क्या सम्बन्ध हो सकता है तो इस सम्बन्ध में उनका कहना है कि बड़े पैमाने पर जानवरों को कत्ल किया जाता है, और कत्ल करने के पूर्व उन्हें भयंकर यातनाएं दी जाती हैं, जिसे सुनकर ही रोंगटे खड़े हो जाते हं। पहले तो उन्हें गाड़ियों में ठूस-ठूस कर कत्लखाने पहुँचाया जाता है, फिर उन्हें कई-कई दिनों तक भूखे रखा जाता है, फिर कत्ल करने के पूर्व उन पर 100 डिग्री का खौलते पानी का बौछार किया जाता है, उसके बाद जीवित अवस्था में ही उनके खाल शरीर से खींच ली जाती हैं, तब जाकर अन्त में गला रेतकर उनका कत्ल किया जाता है। इस पूरे कत्ल के दौरान वे भयंकर वेदना के साथ चीत्कार करते हैं उनकी वही चीत्कार वातावरण में गूंजती रहती हैं। जो वातावरण को तरंगित करती हैं जिस वजह से गर्मी बढ़ती है।

आज पूरी दुनिया भर में करीब 28 करोड़ 50 लाख मैट्रिक टन मांस का उत्पादन किया जाता है। 1 मैट्रिक टन में 1000 किलो होते हैं, इसके लिए करीब 56 अरब यानि 5 हजार 600 करोड़ बड़े जानवरों का कत्ल प्रतिवर्ष किया जाता है। वैदिक संस्कृति का ध्वजवाहक भारत भी इससे अछूता नहीं है, भारत भी एक प्रमुख मांस का उत्पादक और निर्यातक देश बनकर ढेरों सारी विदेशी मुद्राएं अर्जित कर रहा है, यह अत्यन्त ही दुखद है। भारत में आज करीब 58 लाख मैट्रिक टन मांस का उत्पादन प्रतिवर्ष किया जाता है इसके लिए भारतवर्ष में अत्याधुनिक हथियारों से लैस 3600 रजिस्टर्ड कत्लखाने हैं जबकि अनरजिस्टर्ड तो 36000 होंगे। भारतवर्ष कभी ज्ञान और विज्ञान के क्षेत्र में दुनिया का अग्रणी देश रहा है तो भला इसमें पीछे क्यों हो?

जिन जानवरों की हत्या कर मांस का उत्पादन किया जाता है उनमें से सबसे बड़ी संख्या गायों और उसके वंशजों की होती है। फिर उसके बाद सूअरों की संख्या होती है। तीसरे नम्बर पर भैंस एवं उसके वंशज आते हैं, चौथे नम्बर पर भेंड़, बकरा एवं बकरी हैं, और पांचवें नम्बर पर मुर्गा-मुर्गी इत्यादि हैं, इसके अलावे छोटे-छोटे पशु-पक्षी तो अनगिनत हैं। इसकी गिनती इसमें नहीं है।

वैसे हत्या किसी भी प्राणी की निन्दनीय है उस पर गाय की हत्या तो महापाप है, क्योंकि गाय का दूध पीकर ही सभी बल, विद्या और बुद्धि अर्जित करते हैं जिससे शौर्य और पराक्रम दिखा पाते हैं। गाय के दूध का महत्त्व तो इसी से जाना जा सकता है कि किसी भी स्तनधारी जीव के बच्चे की माँ अगर प्रसव काल के दौरान मर जाती है तो बच्चा दूध के बिना मरेगा नहीं, वो गाय का दूध पीकर जी सकता है, यूं ही नहीं गाय को माता का दर्जा दिया जाता है, उस गाय के दूध का कर्ज इस प्रकार उतारा जाता है। क्या विडम्बना है कि जानवरों की सड़क किनारे पड़ी लाशों को देखकर लोग 15 फिट की दूरी से गुजरते हैं वहीं कत्लखाने में तैयार जानवरों की लाशों से बने व्यंजनों को फाइव स्टर होटलों के एअर कंडीशन कमरे के डाइनिंग टेबल पर बैठकर शराब के साथ बहुत ही चाव से खाते हैं। मानवता आज दम तोड़ रही है और हम जश्न मना रहे हैं मांस, शराब और रोमांस के साथ। आखिर इन बेकसूर और मूक जानवरों का कत्ल क्यों किया जाता है? इन्होंने तो किसी का कुछ बिगाड़ा नहीं है, शायद इसलिए कि इनके लिए न तो कोई आयोग है और न ही कोई न्यायालय। लेकिन एक न्यायालय है जहां इन्हें न्याय मिलेगा और दोषी दंडित किये जायेंगे। लगता है कि वो वक्त आ रहा है।

एक बात और वह यह है कि विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार पूरे विश्व की आबादी 700 करोड़ है। उनमें से 200 करोड़ की आबादी आज भुखमरी की शिकार है। इसी भूख और कुपोषण के शिकार इनके बच्चे 40 हजार प्रतिदिन मर रहे हैं, वहीं दूसरी ओर कत्ल किये जाने वाले जानवरों को मोटे और चर्बीदार बनाने के लिए कुल कृषि उत्पादन का लगभग 55 प्रतिशत अनाज इन्हें खिला दिया जाता है। भारत जैसे विकासशील कुल 186 देशों के कृषि उत्पादन का कुल 40 प्रतिशत और अमेरिका जैसे विकसित कुल 16 देशों के कृषि उत्पादन का कुल 70 प्रतिशत यानि लगभग 55 प्रतिशत अनाज इन जानवरों को खिलाया जाता है।

हमारे पास कोई तर्क नहीं है कि हम मांस क्यों खाते हैं? जबकि प्रकृति ने हमारे खाने के वास्ते हजारों चीजें पहले से उपलब्ध कर रखी है। अगर मांस का उत्पादन, उपयोग और उपभोग पूरी तरह से बन्द हो जाये तो हमें क्या-क्या फायदे हो जायेंगे जरा इसे देखिए -

1. मांस का उत्पादन और ट्रांसपोर्टेशन बंद होने से प्रतिवर्ष करोड़ों पशुओं की हत्या रूक जायेगी और उन्हें भी अन्य प्राणियों की तरह जीने का अवसर मिल जायेगा।

2. मांस का उत्पादन और ट्रांसपोर्टेशन बंद होने से कुल 25 प्रतिशत और 32 प्रतिशत गर्मी का बढ़ना रूक जायेगा और ग्लोबल वार्मिंग में कमी आयेगी।

3. मांस का उत्पादन बन्द हो जाने से जानवरों को खिलाये जाना वाले करीब 55 प्रतिशत अनाज की बचत होगी। इससे 200 करोड़ लोगों की भुखमरी तथा प्रतिदिन करीब 40 हजार बच्चों को मौत से बचाया जा सकेगा।

4. मांस का उत्पादन बंद होने से ग्लोबल वार्मिंग में कमी आयेगी जिससे मौसम चक्र संतुलित हो जायेगा फलस्वरूप प्राकृतिक आपदाओं में कमी आयेगी।

5. विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार मनुष्य शरीर में होने वाली बीमारियों में 159 बीमारी ऐसी है जिसका कारण सिर्फ मांसाहार है तो इन होने वाली बीमारियों से लोग स्वत: बच जायेंगे।

अंत में हमारा आपसे अनुरोध है कि ग्लोबल वार्मिंग की वार्निंग को समझे और इसके लिए कुछ पेड़ लगा देना ही काफी नहीं है जबकि आवश्यकता इस बात की है कि हम अपने लाइफ स्टाइल को बदलें और शाकाहार की ओर प्रवृत्त होवें क्योंकि जब लाइफ ही खतरे में है तो स्टाइल किस काम की। स्वयं भी जीयें और दूसरों को भी जीने दें।

- प्रचार मंत्री, आर्य समाज मुजफ्फरपुर, जवाहर लाल मार्ग, मुजफ्फरपुर (बिहार), मो.:-9835206688

Through Remembrances

Maharishi Dayanand Saraswati

1. Maharishi Dyanand - On Deepavali Day Known as a Nirvaan Divas was celebrated in all the Arya Samajistic functions in India and abroad.

Actually, his passing away from this world was regarded through this satisfaction that the world has begun to return to the Vedas-the heartiest will of Maharishi Dayananad Saraswati, otherwise it was a great loss that Swami Dayananad is no more with us. Even then, his ideology, comprising God, Spirit and nature (Traitwad), is unparalelled and that is logically tested on the Vedas.

Above all, he wanted to see Bharat as an independent country in all respects that is Economically, Technolgically, Socially and spiritually.

From Ist to 15th November Jan Chetna Yatra took place to highlight the ideology of Maharishi Dayanand. He was a staunch advocate to women who give birth to men. Even Gandhi Ji drew the idea of women's regeneration from Maharishi Dayanand. Maharshi Ji was the first supporter of Girls' education. He came forward to defend the case of women. So why is there killing of girl's entity from the woman's womb. It is crime as well as a sin.

2. J. L. Nehru - The Birth Anniversary of Pt. Nehru was celebrated on 14th November as 'Universal Children's Day'. This great Architect of modern India whom we lovingly call 'Chacha Nehru' was born on this day in Allahabad.

He was a great political fighter. He brought about the 'Punch sheel' in establishing peace and sympathy, love and harmony among the countries of the world. He was called as a bridge between east and west. He had a balancing attitude. 'Shanti Poorvak Mil Kar Chalo' was his slogan. And it resembles the Vedic tune.

Nehru's patriotic feelings were fired by Rowlatt Act and Jaliyan-wala Bagh Tragedy and he plunged into the freedom Movement of India. 'Quit India Resolution' against Britishers was passed under his leadership.

Besides it he was a great writer. He wrote a famous book named 'Discovery of India'.

3. Indira Gandhi - His only daughter Mrs. Indira Gandhi was a brave International figure. On 19th of November her birthday falls. Actually she and her father Nehru were regarded as Architects of Modern India. Under their leadership India proved herself to be the country of the east as east gives light to the west. Mrs. Indira Gandhi always tuned with the ideology of Maharishi Dayanand who dreampt that India must be independent regarding the science, technology and Architecture.

4. Lala Lajpat Rai. - The day on 17th of November is regarded as 'Balidaan Divas'. He was a great patriot and a staunch arya Samaji and a disciple of Maharishi Dayanand.

He was a great orator who influenced the youths and highlighted their attitude towards patriotism. Due to his fearlessness he was called 'Punjab Kesari'. The Indian revolutionary youths were very happy to have his company and message. Sirdar Bhagat Singh, Raj Guru and Sukhdev were staunch lovers of his ideology.

Lala Lajpat Rai opposed the coming of Siman commission. He was arrested by the English Govt. Under the Lathi charge he was badly wounded. His fearless words, however, were of great enthusiasm-'Every stroke of every staff on my body will certainly prove themselves as the aching nails thrust into the coffin of British empire'.

And this valiant son of Bharat Mata and the courageous follower of Swami Dayanand closed his eyes on 17th November at the age of 64. But his bold words will always be floating in the air to give direction to the young generation at present and in the future.

B.R. Sharma Vibhakar

पृष्ठ–3 का शेष

वेदों में प्रतिपादित नारी का आदर्श स्वरूप

सामाजिक उत्पीड़न की समस्याएँ उत्पन्न ही न हों। परिवार में स्त्री किसी के आश्रित नहीं है जैसा कि परवर्त्ती साहित्य में अनेक श्लोक रच कर स्त्री की स्थिति को दयनीय बना दिया गया। यथा–

पिता रक्षति कौमारे भर्त्ता रक्षति यौवने।
पुत्राः रक्षन्ति वार्द्धक्ये न स्त्री स्वातन्त्र्यमर्हति।।

यहाँ ध्यान देने की बात यह है कि कन्या कुमार अवस्था में विद्याध्ययन के लिए शिक्षणालय में चली गयी है। अतः विद्याध्ययन काल में उसकी रक्षा का प्रश्न ही नहीं है। गृहस्थ जीवन में भी वह स्वयं तेजस्विनी है, परिवार की पोषिका है यहाँ तक कि वह परिवार का आधार है। तभी कहा है जाया इत् अस्तम् (ऋ० ३/५/४) पत्नी ही घर है। **''न गृहं गृहमुच्यते गृहिणी गृहमुच्यते।''**

वेद के अनुसार वह अपने कार्यों के द्वारा प्रशंसित है तथा उसमें अपने पुत्र पुत्रियों को भी अपनी तरह ही साहसी बनाया है। वह घोषणा करती है–

मम पुत्राः शत्रुहणो अथो मे दुहिता विराट्।
उताहमस्मि संज्ञया पत्यौ मे श्लोक उत्तमः।।

ऋ० १०/१५९/३

अर्थात् मेरे पुत्र शत्रु को नष्ट करने वाले हैं। मेरी पुत्री अपने गुणों से 'विशेषेण राजते इति विराट्' है। मैं स्वयं अपने नाम के द्वारा प्रसिद्ध हूँ। मेरे पति पर भी मेरी उत्तम कीर्ति व्याप्त है। जो लोग वेद में पुत्री की उपेक्षा की बात करते हैं उनको वेद के 'दुहिता विराट्' शब्द पर ध्यान देना चाहिए।

इतना ही नहीं अपितु वैदिक नारी अपने पति को गृह कार्यों में भी उचित परामर्श देकर उसकी सहायिका बनती है। अथर्ववेद १४।१।२० में कहा गया है–**त्वं विदथम् आवदासि।** अर्थात् हे पत्नी, तू हमें ज्ञान का उपदेश कर। पत्नी पति को धन प्राप्ति के उपाय भी बतलाती है–**पतिं देवि राधसे चोदयस्व** (अथर्व० ७।४६।३) पति कहता है–तू सब–कुछ जानने वाली हमें धन–धान्य की पुष्टि दे– **''आद्य रायस्पोषं चिकितुषी दधातु''** (अथर्व० ७।४७।२)। ''तू हमारे घर की प्रत्येक दिशा में ब्रह्म अर्थात् वैदिक ज्ञान का प्रयोग कर'' **''ब्रह्मापरं युज्यतां ब्रह्म पूर्वं ब्रह्मान्ततो मध्यतो ब्रह्म सर्वतः''** (अथर्व० १४।१।६४)। इन सब वचनों से यह स्पष्ट सिद्ध होता है कि वेद की सम्मति में प्रत्येक स्त्री को विवाह से पूर्व, जहाँ तक हो सके, सब प्रकार के ज्ञान प्राप्त कर लेने चाहिएँ ताकि वह गृहस्थ जीवन में उनका यथायोग्य उपयोग कर सके। अथर्ववेद १।१४।३ में कन्या के लिए कुलपा = (कुल का पालन करनेवाली) शब्द आया है। इसी प्रकार यजुर्वेद (१४।२) में 'पुरन्धि' शब्द भी इसी अर्थ में पठित है। अथर्ववेद (१४।१।४२) में पत्नी को सौमनस्य, सौभाग्य तथा ऐश्वर्य की कामना करने के लिए कहा गया है, किन्तु यह तभी सम्भव है जबकि वह पति के व्रत का अनुगमन करनेवाली हो। भाव यह है कि ऐसा करने से ही घर में सौमनस्य तथा ऐश्वर्य की प्राप्ति होगी अन्यथा नहीं। इसी अभिप्राय से अथर्ववेद (२।३६।४) में भी पत्नी को पति से विरोध न करनेवाली=**'पत्याऽविराधयन्ती'** कहा है। ऋग्वेद के एक मन्त्र में स्त्री का अत्यन्त ही तेजस्वी स्वरूप इस प्रकार वर्णित है। स्त्री कहती है कि मैं ध्वज के तुल्य अग्रगण्य हूँ। मैं ही मूर्धा के समान प्रमुख हूँ। आवश्यकता पड़ने पर मैं उग्र स्वरूपवाली भी हो जाती हूँ तथा मैं श्रेष्ठ वक्ता भी हूँ। मेरे यशस्वी कार्यों के अनुरूप ही मेरा पति आचरण करे। इसी प्रकार ऋग्वेद के ही एक अन्य मन्त्र में स्त्री को शत्रुनाशक, विजयिनी कहा है।

कुछ लोग आक्षेप करते हैं कि वेद में स्त्रियों के साथ सखाभाव का निषेध किया गया है। यह भेदपूर्ण स्थिति है। इसका उत्तर यह है कि आचरण की शुद्धता और चारित्रिक दृष्टिकोण के कारण ऐसा कहा गया है। वेद में पति का पत्नी के प्रति सखाभाव रखने का स्पष्ट उल्लेख है, किन्तु सभी स्त्रियों के साथ सखाभाव का औचित्य नहीं है जैसाकि आजकल स्कूल–कॉलेजों में तथा अन्यत्र भी Girl Friend तथा Boy Friend की प्रथा चल पड़ी है। इससे अनेक चारित्रिक दोष पैदा हो रहे हैं। चारित्रिक शुद्धता के कारण ही मनुस्मृति में तो यहाँ तक प्रतिबन्ध लगा दिया गया है कि माता, बहिन तथा बेटी के साथ एक ही आसन पर न बैठे। कितनी व्यवहारिक बात है। संग से चारित्रिक दोष उत्पन्न हो सकता है इसीलिए वेद में स्त्री के साथ मैत्रीभाव का निषेध किया गया है।

अन्य वैदिक-साहित्य–वेद के समान ब्राह्मण–ग्रन्थों में भी स्त्री को गौरवपूर्ण स्थान प्राप्त है। शतपथ ब्राह्मण में पत्नी को पति का आधा भाग मानकर यहाँ तक कह दिया गया है कि जब तक व्यक्ति पत्नी को प्राप्त नहीं कर लेता तब तक अपूर्ण ही रहता है। इसी प्रकार के भाव ऐतरेय आरण्यक में भी प्रकट किये गये हैं। उपनिषद् काल में भी नारी की यही बहुत उत्कृष्ट स्थिति रही है। उपनिषद् काल में नारी ब्रह्मवादिनी रही है। याज्ञवल्क्य के साथ शास्त्रार्थ में गार्गी याज्ञवल्क्य जैसे ब्रह्मवेत्ता को भी शास्त्रार्थ में निरुत्तर कर देती है। इसी प्रकार मैत्रेयी सांसारिक भोग, ऐश्वर्य, धन–धान्य की अपेक्षा ज्ञान प्राप्त करने को प्रमुखता देती है। यह है उपनिषद्कालीन नारी का गौरवपूर्ण इतिहास।

स्मृति ग्रन्थों में भी नारी की अति–सम्माननीय स्थिति का चित्रण है। मनुस्मृति में भी भार्या को मनुष्य का आधा भाग तथा श्रेष्ठतम सखा कहा गया है। मनुस्मृति का वह श्लोक तो सर्वविदित ही है जिसमें कहा गया है कि जहाँ स्त्रियों का सत्कार होता है। वहाँ देवता निवास करते हैं।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में एक अन्य श्लोक की तरफ आपका ध्यान आकृष्ट कराना चाहती हूँ जिसमें कहा गया है, कि जहां नारियों का उत्पीड़न होता है उनपर अत्याचार होता है वे रोती हैं, पीड़ित होती हैं, वह समाज और शब्द नष्ट हो जाता है। आज के सभ्य समाज में नारी का अनेक प्रकार से शोषण हो रहा है, उसका उत्पीड़न हो रहा है अतः आज हमारा समाज तथा राष्ट्र–पतन की ओर ही उन्मुख है, घरों से सुख–शान्ति मानो विदा हो चुकी है।

हमें इस ओर विचार करना चाहिए। द्वापर युग में अकेली द्रौपदी पर हुए अत्याचार ने महाभारत करा दिया था। आज तो न जाने कितनी ललनाएँ उससे भी गयी–बीती दशा को प्राप्त कर रही हैं। आज का तथाकथित सभ्य समाज क्या इस ओर ध्यान देगा।

अध्यक्ष - संस्कृत विभाग, वैश्य आर्यकन्या महाविद्यालय, बहादुरगढ़ (हरियाणा)

अब आर्य समाज की गतिविधियाँ हिण्डौन हाउस से ओमानन्दम् पर होगी

जयपुर हिण्डौन हाउस में चल रहा आर्य समाज जयपुर दक्षिण का साप्ताहिक अधिवेशन ध्यान उपासना यज्ञ सतसंग आदि कार्यक्रम 11 अक्टूबर, 2015 रविवार से मानसरोवर रजत पथ स्थित ''ओमानन्दम्'' 35/60 पर होगा।

आर्य समाज के प्रधान डी.-के. गुप्ता ने बताया कि हर रविवार प्रातः 7.30 बजे से 10 बजे तक ध्यान, उपासना, यज्ञ वेद प्रवचन होंगे। कार्यक्रम वैदिक प्रवक्ता यशपाल 'यश' के सान्निध्य में होगे।

– कार्यालय सचिव

आर्य समाज की गतिविधियाँ

वैदिक सत्संग समारोह सोल्लास सम्पन्न
वेद संसार के सभी रहस्यों की कुंजी है – आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री

पाणिनी महाविद्यालय रेवली के तत्वावधान में आयोजित वैदिक सत्संग समारोह में अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति के प्रख्यात वैदिक विद्वान आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री जी ने समारोह को सम्बोधित करते हुए कहा कि ज्ञान-विज्ञान का सागर है - वेद। ज्ञान के साधकों के लिए वेद प्रेरणा का स्रोत है। वेदों में परमात्मा का पवित्रतम प्रकाश प्रसारित है। वेद ही एक ऐसा ग्रंथ है, जिनमें सभी सत्य विद्याओं, ज्ञान-विज्ञान के ज्ञात एवं अज्ञात रहस्यों, सफल जीवनयापन के अनिवार्य सिद्धान्तों और वर्तमान समय की समस्त जटिल से जटिल समस्याओं का पूर्ण समाधान निहित है।

आचार्य श्री चन्द्रशेखर शास्त्री जी ने काव्यात्मक शैली में कहा -

मानव हो तो मानव में भेद ना समझ, वेद पढ़ के उसकी वेदना समझ,
चित्त में परम चैतन्य की चेतना समझ, हृदय के प्रेम में उसकी प्रेरणा समझ।

महाविद्यालय में रहने वाले ब्रह्मचारियों एवं सभी सत्संगप्रेमियों के लिए सूक्ति परक शैली में यशस्वी विद्वान आचार्य चन्द्रशेखर जी ने कहा कि आलस्य से विद्या की हानि होती है, लापरवाही से व्यापार की हानि होती है, धन की कमी से प्रीति की हानि होती है, घमण्ड करने से प्रतिष्ठा की हानि होती है, नेता के बिना दल की हानि होती है और ज्ञान के बिना सर्वत्र हानि होती है। इस अवसर पर स्वामी विदेहयोगी जी, आचार्य श्रवण कुमार जी, आचार्य ओंकार जी, श्री सनत कपूर जी, श्री ज्योति अरोड़ा जी आदि गणमान्य महानुभाव उपस्थित थे।

कार्यक्रम के संयोजक डॉ. कृष्णदेव जी ने आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री जी का हार्दिक अभिनन्दन करते हुए सारगर्भित एवं ओजस्वी प्रवचन के लिए आभार प्रकट किया।

- सूर्यकान्त मिश्र, सह संपादक

आर्य समाज मंदिर, पिलखुवा का वेद प्रचार सप्ताह

सभी नगरवासियों को जानकर हर्ष होगा कि गत वर्षों की भांति इस वर्ष भी आर्य समाज पिलखुवा अपना वेद प्रचार सप्ताह बड़े उत्साहपूर्वक मना रहा है जिसमें आर्य जगत के उच्चकोटि के विद्वान एवं भजनोपदेशक पधार रहे हैं उपस्थित होकर धर्म लाभ उठाएँ। इस अवसर पर एक यजुर्वेद पारायण यज्ञ का आयोजन विशेष सामग्री द्वारा किया जा रहा है। इस यज्ञ में अपनी आहुति देकर यज्ञ लाभ प्राप्त करें।

आमंत्रित विद्वान

सर्वश्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी सरस्वती, मंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश
आचार्य डॉ. सोमदेव जी शास्त्री, वैदिक विद्वान
पं. नरेश दत्त आर्य, भजनोपदेशक
पं. गौरव शास्त्री, पुरोहित आर्य समाज मंदिर
नोट : यजुर्वेद पारायण यज्ञ में वेदपाठ गुरुकुल महाविद्यालय ततारपुर के ब्रह्मचारियों द्वारा किया जायेगा।

दैनिक कार्यक्रम

दिनांक 13 अक्टूबर, 2015 (मंगलवार) से 19 अक्टूबर, 2015 (सोमवार) तक
प्रात: 7 से 10.30 बजे तक यजुर्वेद पारायण यज्ञ, प्रवचन एवं भजनोपदेश
रात्रि 7 से 10 बजे तक भजन एवं वेदोपदेश

- मंत्री आर्य समाज पिलखुआ, मो.:-9837899582

गुरुकुल पूठ, हापुड़ का रजत जयन्ती समारोह
दिनांक 6 से 8 नवम्बर, 2015 तक

लखनऊ : आज दिनांक 9 अक्टूबर, 2015 को गुरुकुल पूठ की रजत जयन्ती समारोह के शुभ अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा, उ. प्र. लखनऊ के तत्वावधान में दिनांक 6 से 8 अक्टूबर, 2015 (तीन दिवसीय) प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन का आयोजन गुरुकुल पूठ, जनपद-हापुड़ में किया गया है, जिसमें वैदिक विचारधारा के विद्वान् साधु-संन्यासियों के अलावा अनेक राजनेतागण पधारेंगे, जिसमें सभी आर्य संस्थाओं से निवेदन है कि वे इस कार्यक्रम में भारी संख्या में अपनी भागीदारी अवश्य सुनिश्चित करायें। आपका सहयोग एवं आशीर्वाद सम्मेलन की सुचारू व्यवस्था में सहयोग प्रदान करेगा।

- स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती, सभामंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश

नीरज योगी ने सिखाये योग के गुर व अल्फामैडिटेशन

गाजियाबाद, शनिवार10 अक्टूबर। अखिल भारतीय योग संस्थान के तत्वावधान में नेहरू नगर स्थित जानकी वाटिका में ध्यान योग शिविर का आयोजन संस्थान के संरक्षक श्री राज कुमार त्यागी की अध्यक्षता में किया गया। जिसमें ऋषिकेश से पधारे आचार्य नीरज योगी ने साधकों को सिखाये योग के गुर व अल्फा मैडिटेशन जिसे साधकों ने बड़े मनोयोग से सुना व सीखा। उन्होंने सर्वप्रथम प्रणव ध्वनि ओ३म् एवंगायत्री मंत्र से सत्र को प्रारंभ किया। आचार्य जी ने साधकों को योग द्वारा रोगों का निदान की चर्चा करते हुये कहा कि भारत में कुछ वर्षों पहले तक लोग शारीरिक रोगी हुआ करते थे परंतु आज शरीर से ज्यादा मानसिक रोगियों की संख्या लगातार बढ रही है। इस कारण मानसिक तनाव से मनुष्य अपने धैर्यको खोता जा रहा है।योग से रोग निदान की चर्चा करते हुये कब्ज, अनिद्रा, कमरदर्द, खून की कमी, जोडों के दर्द, गले के रोग, त्वचारोग, दमा, नेत्र विकार, कानरोग, मधुमेह, मोटापा, सिरदर्द, हाई एवं लो ब्लड प्रैशर आदि रोगों के निदान हेतु कपाल शोधन किया व सूक्ष्म व्यायाम, मंडूकासन, उत्तानपादासन, शयन पाद संचालन, हस्तस्पर्शासन, पवनमुक्तासन, सिंहासन, सर्वांगासन, हलासन, भुजंगासन, धनुरासन आदि आसनों को कराते हुये शरीर एवं मन पर पड़ने वाले प्रभावों पर विशेष प्रकाश डाला।

अखिल भारतीय योगसंस्थान के अध्यक्ष योगीकृष्ण कुमार अरोडा ने स्वास्थय आहार के मूलभूत सिद्धांत पर कहा कि योगासन के साथ–साथ आहार चिकित्सा भी आवश्यक होता है। प्रत्येक मनुष्य कोप्रातः आहार हल्का एवं सुपाच्य छारयुक्त लेना चाहिये। जितना संभव हो सके आहार बिना तला–भुना प्राकृतिक रूप से होतो अच्छा है। दोभिन्नतासीर वाले आहार या द्रव्य साथ–साथ न लें। आहार उम्र तथा मौसम अनुकूल शारीरिक अवस्था को दृष्टिगत रखते हुये ही लेना चाहिये।

संगठन मंत्री श्री अशोक शास्त्री जी ने बताया कि श्वांस मानव की पहली आवश्यक्ता है, दीर्घ श्वांस के माध्यम से हृदय, फेफडे, त्वचा, डिप्रेशन, शारीरिक व मानसिक निर्बलता जैसे रोगों का निदान संभव है।

मंच का कुशल संचालन केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के प्रान्तीय महामंत्री श्री प्रवीण आर्य ने किया।

इस अवसर पर मुख्य रूप से अखिल भारतीय योग संस्थान से सर्वश्री देवेन्द्र हितकारी, अशोक शास्त्री, कृष्ण कुमार अरोडा, शिवदत्त, सुभाष गर्ग, श्रीमती वीना वोहरा, रीतू सिंघल, आशारानी, प्रियंका आर्या, अनुज यादव, जयकिशन शर्मा, इन्द्रमोहनकपूर, सतीश गर्ग आदि मौजूद रहे।

अंत मेंश्रीमन मोहन वोहरा जी ने आगंतुकों का हृदय से शिविर में भाग लेने पर आभार व्यक्त किया।

हास्यासन व शान्तिपाठ के साथ कार्यकम सम्पन्न हुआ।

– प्रवीण आर्य, प्रेस सचिव

स्वामी श्रद्धानन्द व पं. रामप्रसाद बिस्मिल बलिदान स्मृति में
कन्या भ्रूण हत्या, अन्धविश्वास व नशाखोरी के विरुद्ध

स्वामी दयानन्द सरस्वती

प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन, जीन्द (हरियाणा)

दिनांक 13 दिसम्बर, 2015 (रविवार) प्रातः 10 बजे
महर्षि दयानन्द योग चिकित्सा आश्रम 3705 अर्बन एस्टेट, जीन्द (हरियाणा)

स्वामी इन्द्रवेश

अध्यक्षता : स्वामी आर्यवेश जी, प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली

मुख्य वक्ता एवं अतिथि : स्वामी ओमवेश जी पूर्व गन्ना मंत्री, उत्तर प्रदेश, स्वामी प्रणवानन्द जी सरस्वती, गुरुकुल गौतमनगर, दिल्ली, स्वामी चन्द्रवेश जी (टिटौली), स्वामी श्रद्धानन्द (पलवल), स्वामी विजयवेश जी (गुड़गांव), श्री सत्यव्रत सामवेदी (कार्यकारी प्रधान सार्वदेशिक सभा), प्रो. विट्ठलराव आर्य, मंत्री सार्वदेशिक सभा, राजकुमार गुप्ता एडवोकेट (चण्डीगढ़), चौ. हरिसिंह सैनी (पूर्व मंत्री हरियाणा), श्री बिरजानन्द एडवोकेट, प्रो. श्योताज सिंह (महामंत्री बंधुआ मुक्ति मोर्चा), बहन पूनम आर्या (प्रधान बेटी बचाओ अभियान), प्रवेश आर्या (संयोजक बेटी बचाओ अभियान), जगमति मलिक आर्या (कैथल), श्री रामलाल आर्य (गुड़गांव), चौ. मेलाराम आर्य (दिवाल), श्री लक्ष्मीचन्द आर्य (फरीदाबाद), चौ. सूबे सिंह (पूर्व एस. डी. एम.), श्री राममोहन राय एडवोकेट (पानीपत), प्रिं. आजाद सिंह आर्य, श्री मोहित आर्य (यमुनानगर), श्री इन्द्रजीत आर्य (नरवाना), श्री जगदीश सींवर (सिरसा), श्री दर्शन सिंह आर्य (प्रधान जाट कालेज कैथल), श्री जयपाल मलिक (नेहरू युवा केन्द्र), प्रो. यशवीर शास्त्री (खरकाली), श्री सन्तराम आर्य।

भजनोपदेशक : श्री सहदेव बेधड़क, कुलदीप आर्य (बिजनौर), श्री सुखवीर शास्त्री, श्री हवासिंह तुफान

संयोजक : स्वामी रामवेश जी, प्रधान, नशाबन्दी परिषद्, हरियाणा

निवेदक

सर्वश्री मा. सतवीर आर्य, रणवीर रेढू एडवोकेट, कर्ण सिंह रेढू, ठाकुर तेलू सिंह, भौम सिंह आर्य, मा. जगदीश आर्य, सहदेव शास्त्री, धूलाराम आर्य, डॉ. राजपाल आर्य, धर्मवीर आर्य (सरपंच), देवेन्द्र आर्य, सूरजमल आर्य, वीरेन्द्र आर्य, नरेश आर्य, मा. मोहन लाल आर्य, मा. राजवीर आर्य, दयाकिशन आर्य, देवराज शास्त्री, सौदागर चन्द आर्य, कर्मपाल आर्य, दयानन्द अहिरका, सूरजमल पहलवान, मा. इन्द्रसिंह, सुबेर सिंह, जसवन्त आर्य, जिले सिंह आर्य, सतपाल आर्य, विजय आर्य, रघुवीर सिंह मलिक, मा. राधूराम, वजीर सिंह आर्य, सत्या आर्या, पृथ्वी सिंह चहल, मांगेराम आर्य, डॉ. बलवीर सिंह आर्य, सूर्यदेव आर्य, विद्यासागर शास्त्री, डॉ. राजेन्द्र यादव, जगफूल ढिल्लो, मा. बलवीर आर्य, जौरा सिंह हुड्डा, मा. सुलतान सिंह, सत्यदेव शास्त्री आदि।

महर्षि दयानन्द योग चिकित्सा आश्रम, 3705 अर्बन स्टेट, जीन्द (हरियाणा)
दूरभाष :- 01681-248638, 9416148278

बधू चाहिए

उम्र 23 वर्ष, कद 6 फुट 1 इंच, गौर वर्ण, अति सुन्दर व स्वस्थ 12वीं उत्तीर्ण स्व व्यवसाय, सम्पन्न पारिवारिक आर्य जाट युवक के लिए आर्य सजातीय परिवार की गृह कार्य में दक्ष कन्या चाहिए। वर्जित तोमर गोत्र।

-: सम्पर्क सूत्र :-

07830781545, 07060150375

पुस्तक समीक्षा

पौराणिक समाज में फैली अवैदिक परम्पराओं में मृत्यु के उपरान्त दिवंगत आत्मा की सद्गति हेतु 'गरुड़ पुराण'' की कथा का प्रचलन आम हो गया है। पुराणों के जाल में हिन्दू समाज इस कदर उलझ गया है कि वेदादि शास्त्रों के प्रति उसकी रुचि, विश्वास और श्रद्धा निरन्तर ह्रास को प्राप्त हो रही है और जीवन अवैदिक औपचारिकताओं के बोझ के नीचे दबता चला जा रहा है। प्रस्तुत पुस्तक ''शाश्वत जीवन'' जिसने एक अनमोल निधि के रूप में आकार लिया है और हिन्दू समाज में व्याप्त आडम्बर, पाखण्ड, अन्धविश्वास की पोल खोलकर रख दी है।

''शाश्वत जीवन'' का आद्योपान्त अवलोकन करने के उपरान्त मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचा हूँ कि एक मिथ्या अवधारणा के विकल्प में तथा वेदादि शास्त्रों के आलोक में लिखी गई यह पुस्तक असत्य से सत्य की ओर, अन्धकार से प्रकाश की ओर तथा मृत्यु से अमरत्व की ओर ले जाने में पूर्ण समर्थ है तथा रूढ़ियों, आडम्बरों और अन्धविश्वासों के रूप में जो कॅचुली हमारी प्राचीन परम्परा, ज्ञान और विज्ञान को ढंके हुए है उस कॅचुली को विद्वान लेखक ने उतार फेंका है। अनेक अन्य वैदिक ग्रन्थों के उद्धरण प्रस्तुत कर तथा अनेकों मनीषियों के प्रवचनों का सार देकर ''गरूड़ पुराण'' परलोक का सत्य नहीं है सिद्ध करने का सफल प्रयास किया है।

सार्वदेशिक सभा के अन्तरंग सदस्य डॉ. लक्ष्मणदास आर्य के स्वाध्याय प्रेमी विद्वान पिताश्री स्वामी महेश्वरानन्द सरस्वती जी (मूलचन्द्र आर्य) ने अपने जीवन काल में इस पुस्तक का प्रणयन किया था जो किन्हीं कारणों से उनके जीवन काल में प्रकाशित नहीं हो सकी थी। लेकिन उनके सुयोग्य सुपुत्र जो कि अत्यन्त निष्ठावान कर्मठ, जुझारू, जागरूक और सक्रिय आर्य समाजी है के विशेष प्रयासों से इस पुस्तक का प्रकाशन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने कराया है। इस समाजोपयोगी पुस्तक को सामने लाने में उनका प्रयास प्रशंसनीय है अत: उन्हें साधुवाद देता हूँ। बहुरंगी आवरण में 184 पृष्ठ की ''शाश्वत जीवन'' नामक पुस्तक जो अत्यन्त अल्प मूल्य मात्र 100/- रुपयें में प्राप्त होगी, आत्मविद्या के जिज्ञासुओं के लिए प्रेरणादायक सिद्ध होगी तथा समाज को उन्मार्ग से हटाकर सन्मार्ग पर लायेगी ऐसी आशा करता हूँ।

पुस्तक प्राप्ति स्थान

1. **सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा,** ''दयानन्द भवन'' 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली-2
2. **डॉ. लक्ष्मण दास आर्य,** लक्ष्मण रेडियो, स्टेशन रोड, जिला-अशोक नगर-473331 (मध्य प्रदेश)
   मो.: 9425133481

- स्वामी आर्यवेश, प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली-2

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा
25 हजार वेद सैट प्रकाशित करने की महत्त्वाकांक्षी योजना

घर-घर तक पहुँचाई जायेगी परमात्मा की वेद वाणी

चारों वेदों का सम्पूर्ण हिन्दी भाष्य

लागत मूल्य 3100/- रुपये

(महर्षि दयानन्द, तुलसीराम स्वामी एवं पं. क्षेमकरण दास कृत)
(10 खण्ड, 9 जिल्दों में)

भारी छूट पर उपलब्ध

एक लाख रुपये अग्रिम देने वाले महानुभावों का चित्र तथा संक्षिप्त परिचय वेद सैट में प्रकाशित किया जायेगा तथा दस वेद सैट उन्हें निःशुल्क प्रदान किए जायेंगे।

3100/- रुपये का एक वेद सैट 25 प्रतिशत की छूट पर उपलब्ध है
10 अथवा उससे अधिक वेद सैट लेने पर 30 प्रतिशत की छूट दी जायेगी

प्रत्येक आर्य समाज, स्कूलों के पुस्तकालयों, वाचनालयों तथा प्रत्येक घर में परमात्मा की वाणी वेदों का होना आवश्यक है। अधिक से अधिक संख्या में अग्रिम आदेश भेजकर भारी छूट का लाभ उठायें। डाक व्यय 225/- रुपये अलग से देना होगा। प्रारम्भिक स्तर पर 25 हजार वेद सैट प्रकाशित करने की योजना क्रियान्वित की जायेगी। अपना आदेश 'सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा' के नाम चैक/बैंक ड्राफ्ट द्वारा ''दयानन्द भवन'' 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली-2 के पते पर अग्रिम भेजकर अपना वेदों का सैट बुक करा सकते हैं।

-: प्रकाशक :-
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, ''दयानन्द भवन'' 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली-110002

पंजीयन संख्या DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/15-17
Licence to Post without prepayment of Postage. [U (c)-289/2015-17]

अश्वारोही बनो

**कालो अश्वो वहति सप्तरश्मिः सहस्त्राक्षो अजरो भूरिरेताः।
तमा रोहन्ति कवयो विपश्चितः तस्य चक्रा भुवनानि विश्वा।।**

—अ० १६/५३/१

ऋषिः—भृगुः।। देवता—कालः।। छन्दः—त्रिष्टुप्।।

विनय—कालरूपी महाबली घोड़ा चल रहा है। यह सब संसार को खींचे लिये जा रहा है। इस विश्व के सब प्रकार के जगतों में सात तत्त्व काम कर रहे हैं। (सब जगतों में सात लोक, सात भूमियाँ हैं, सप्त प्रकार की सृष्टि है और प्रत्येक प्राणी में भी सात प्राण, सात ज्ञान और सात धातु हैं)। ये ही सात रस्सियाँ (रश्मियाँ) हैं, जिनसे यह विश्व उस कालरूपी घोड़े से जुड़ा हुआ है। काल की महाशक्ति से जुड़कर इस ब्रह्माण्ड के सब भुवन, सब लोक, सब मनुष्य, सब प्राणी, सब उत्पन्न वस्तुएँ चक्र की भाँति घूम रही हैं। इन असंख्य भुवनों में, उत्पन्न चर या अचर पदार्थों के असंख्यात अक्षों (व्यक्ति–केन्द्रों) को गति देता हुआ, यह महाशक्ति काल अपने इन भुवन–चक्रों द्वारा इस समस्त विश्व को चला रहा है। इस प्रकार यह संसार न जाने कब से चलाया जा रहा है! हम परम तुच्छ मनुष्यों की क्या गणना, असंख्यों वर्षों की आयुवाले बहुत–से सौर–मण्डल भी जीर्ण होकर सदा से इस अनन्तकाल में लीन होते गये हैं, परन्तु कभी जीर्ण न होता हुआ यह कालदेव आज भी अपनी उसी और उतनी ही शक्ति से इस विश्व–ब्रह्माण्ड को खींचे लिये जा रहा है। इस कालदेव की मेरे कोटि–कोटि प्रणाम हैं। भाइयो! क्या तुम्हें यह कभी जीर्ण न होनेवाला, सब विश्व को चलाने वाला महावीर्य अश्व दीख रहा है? याद रक्खो इस महावेगवान् अश्व की सवारी वे ही ले–सकते हैं जो ज्ञानी हैं– जो समय को पहचानते हैं, जिनकी दृष्टि इस सबको हिलाने वाले अनन्त कालदेव के दर्शन पाकर विशाल हो गई है, अतएव जो क्रान्तदर्शी हैं, जो विशाल भूत और भविष्य को दूर तक देख रहे हैं, जो अज्ञानी या अतिचञ्चल मनुष्य, स्थिर ज्ञान–प्रकाश को न पाकर क्षुद्र दृष्टि वाले और काल के महत्त्व को न पहचानने वाले हैं, वे तो काल–रथ पर नहीं चढ़ सकते और न चढ़ सकने के कारण वे या तो कुचले जाते हैं, या कुछ दूर तक घिसटते जाकर कहीं इधर–उधर दूर जा पड़ते हैं और मार्ग–भ्रष्ट हो जाते हैं, या इसके नीचे यूँ ही पड़े रहकर नष्ट हो जाते हैं, इसीलिए काल नाम मृत्यु का हो गया है, परन्तु वास्तव में काल तो वह महाशक्तिवाला, महावेगवाला यान है, जिस पर सवार होकर हम बड़ी जल्दी अपना मार्ग तय करके लक्ष्य पर पहुँचे सकते हैं, अतः आओ, हम आज से काल के सवार बनें, अपने पल–पल, क्षण–क्षण का सदा सदुपयोग करें, इस महाशक्ति को कभी भी गंवाएँ नहीं और काल की इस विशालता को देखते हुए सदा ऊँची–विशाल दृष्टि से ही समय के अनुसार अपना कर्त्तव्य निश्चय किया करें।

शब्दार्थ—**सप्तरश्मिः**=सात रस्सियों वाला! **सहस्त्राक्षः**=हजारों धुरों को चलाने वाला **अजरः**=कभी भी जीर्ण, बुढ्डा न होने वाला **भूरिरेताः**=महाबली **कालः अश्वः**=समयरूपी घोड़ा **वहति**=चल रहा है–संसार–रथ को खींच रहा है। **विश्वा भुवनानि**=सब उत्पन्न वस्तुएँ, सब भुवन **तस्य**=उसके **चक्राः**=चक्र हैं– उस द्वारा चक्रवत् घूम रहे हैं। **तम्**=उस घोड़े पर **विपश्चितः**=ज्ञानी और **कवयः**=क्रान्तदर्शी लोग ही **आरोहन्ति**=सवार होते हैं।

साभार- 'वैदिक विनय' से
आचार्य अभयदेव विद्यालंकार

प्रतिष्ठा में :–

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

सोशल मीडिया के माध्यम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

आर्य युवा सन्यासी व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें www-facebook-com/SwamiAryavesh व फेसबुक पेज को लाइक करें व अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।

ई–मेल : aryavesh@gmail.com
Tel. :-011-23274771

'''Social Media '''पर ''''आर्य समाज '''' की नई पहल

नमस्ते आर्यजन
2 मिनट 'मिशन आर्यावर्त' के लिए जरूर दें।
आर्यजन हमने मिशन आर्यावर्त के whats app न्यूज बुलेटिन को शुरू किया है। जिसका बहुत सुंदर परिणाम मिला।अब तक लगभग 23 हजार whats app नंबर पर हर सप्ताह हम इसको शेयर करते हैं। इसके माध्यम से हम देश दुनिया में आर्य समाज के सकारात्मक स्वरूप को ले जाना चाहते हैं। आज आर्य समाज कार्य तो बहुत कर रहा है परन्तु उसको सामूहिक रूप से प्रसारित नहीं कर पा रहा। इस बुलेटिन के माध्यम से हम सम्पूर्ण आर्य जगत की गतिविधियों को शामिल करके आप लोगों तक पहुंचाने का कार्य करेंगे। अभी इस बुलेटिन को सप्ताह में सिर्फ एक दिन प्रचारित व प्रसारित करने का विचार है वो भी रविवार को। इससे जुड़ने के लिए आपको दो कार्य करने है :–
(1) आपको अपना whats app नम्बर अपने नाम व स्थान के साथ लिख कर हमारे पास भेजना है।
ताकि आपको निरंतर बुलेटिन मिलता रहे।
(2) आपको अपना समाचार फोटो के साथ व संक्षिप्त जानकारी के साथ हमारे whats app नम्बर पर भेजना है। ताकि हम उसको whats app बुलेटिन में शामिल कर सकें। इनको आप ग्रुप में पोस्ट न करके सीधे हमारे whats app पर पोस्ट करेंगे।
'''कुछ समय के बाद हम इसका वीडियो version भी तैयार करेंगे।
''''हमारा दूसरा कार्यक्रम''''
आर्य विचार मंथन
मेरे सात सवाल जिसमे लगभग 15 मिनट का किसी एक आर्य संन्यासी,नेता व विद्वान का साक्षात्कार होगा। जिसमे आर्य समाज के विषय पर उनके विचार लिए जायेंगें।
प्रतिदिन वेद, रामायण ,महाभारत, योग, चाणक्य, हितोपदेश आदि पर सुविचार भी आप तक भेजे जायेंगे। हमारा whats app नम्बर 9354840454 है। आपके सुझाव सादर आमन्त्रित हैं। आपसे निवेदन है के आप इस सन्देश को ज्यादा से ज्यादा साथियों तक प्रचारित व प्रसारित करें ताकि मिशन आर्यावर्त के संकल्प को मजबूती मिल सके। यदि आप मिशन आर्यावर्त का हिस्सा बनना चाहते हैं हमारे साथ कार्य करना चाहते हैं तो भी आप सम्पर्क जरूर करें।

– ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य

वर चाहिए

उम्र 25 वर्ष, लम्बाई 5 फुट 5 इंच, शिक्षा–एम.ए. ड्राइंग एण्ड पेन्टिंग (प्रथम श्रेणी), बी.एड., आई.जी.डी.ई. मुम्बई, नेट परीक्षा उत्तीर्ण करने के लिए प्रयासरत, उच्चकोटि की वक्ता, सुन्दर, गृह कार्य में दक्ष, गौर वर्ण, अति योग्य जाट आर्य कन्या के लिए सजातीय, सुयोग्य, स्वस्थ, सुन्दर आर्य समाजी वर की आवश्यकता है।

–: सम्पर्क सूत्र :–
07830781545, 07060150375

आर्य समाज रावतभाटा में किया बुजुर्गों का सम्मान

04–10–2015, रविवार को आर्य समाज रावतभाटा में बुजुर्ग सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर श्रीराम बाल विद्या मन्दिर की प्राचार्या 74 वर्षीय श्रीमती मीरा चटर्जी को शाल ओढ़ाकर व अभिनन्दन पत्र देकर सम्मानित किया गया। उन्होने अपने सम्बोधन में कहा कि बच्चों को शिक्षित करना यही मेरे जीवन का उद्देश्य है। गरीब बच्चो की मदद कर उनको आगे बढाने का हर सम्भव प्रयास करती रहेंगी।

ब्यावर के पास लस्सानी–2 गांव से पधारे मुख्य वक्ता श्री मोहनलाल जी ने बताया कि मनुष्य जीवन का लक्ष्य मोक्ष प्राप्त करना है। उन्होने पंचमहायज्ञों के बारे में जानकारी दी व बताया कि इन्हे अपने जीवन में अपनाकर मोक्ष प्राप्ति के लक्ष्य की ओर बढा जा सकता है। श्री मोहनलालजी रिटायर होकर अपने गांव में ही रहकर आस–पास के विद्यालयों में वैदिक प्रश्नोत्तरी के माध्यम से वैदिक ज्ञान का प्रसार कर रहें हैं। इनके आर्थिक सहयोग से ओम प्रकाश आर्य ने वैदिक ज्ञान के प्रचारार्थ अपने कल्पना चित्रण से 6 वैदिक कलेन्डरों को बनाया है जिनमे चित्रों के माध्यम से गूढ़ ज्ञान को सहजता से समझाया जा सकता है। रमेश चन्द्र भाट ने कहा कि माता–पिता, बुजुर्ग, गुरुजन व संन्यासी जो यथार्थ व सत्य ज्ञान से हमारी समस्याओं का समाधान कर हमें तार सके वही सच्चे तीर्थ है इसलिये उनके जीते जी उनकी सेवा करना ही सच्चा श्राद्ध है व अपनी सेवा से उनके मन को प्रसन्न कर देना ही तर्पण है।

मन्त्री ओम प्रकाश आर्य ने कार्यक्रम का संचालन किया व बताया की बड़ी उम्र में भी अच्छे काम किये जा सकते है जैसे श्री क्षेमकरणदास त्रिवेदी ने रिटायर होने के बाद संस्कृत भाषा को सीखा व महर्षि दयानन्द के अधूरे काम अर्थववेद का भाष्य किया। मुख्य अतिथि जगदीश प्रसाद चौधरी ने कहा कि बुजुर्ग की सेवा करने से आयु, बल, विद्या व बुद्धि की वृद्धि होती है। शारदा साहित्य मंच के कवि अरुण कुमार भट्ट, गोविन्द प्रसाद, मदन लाल व दिनेश कुमार छाजेड़ ने बुजुर्गों के सम्मान में काव्य पाठ किया।

25 बुजुर्गों को कम्बल भेंट किये गये। इस पुनीत कार्य के लिये श्री तिलक राम शर्मा, अशोक कुमावत, श्याम कुमार सोनी, गायत्री देवी, राजकुमार सूद ने आर्थिक सहयोग दिया व श्री विनोद कुमार त्यागी ने प्रसाद व मोहनी देवी ने अल्पाहार की व्यवस्था करी। आर्य वीर दल के जोत सिंह का कार्यक्रम की व्यवस्था बनाने में सहयोग रहा।

– रमेश चन्द्र भाट, कोषाध्यक्ष, आर्यसमाज रावतभाटा, वाया कोटा (राजस्थान), चलभाष – 09413356728

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (फोन : 011-23274771, 23260985 टेलीफैक्स : 23274216)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com
वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।